हमारा छुटकारा

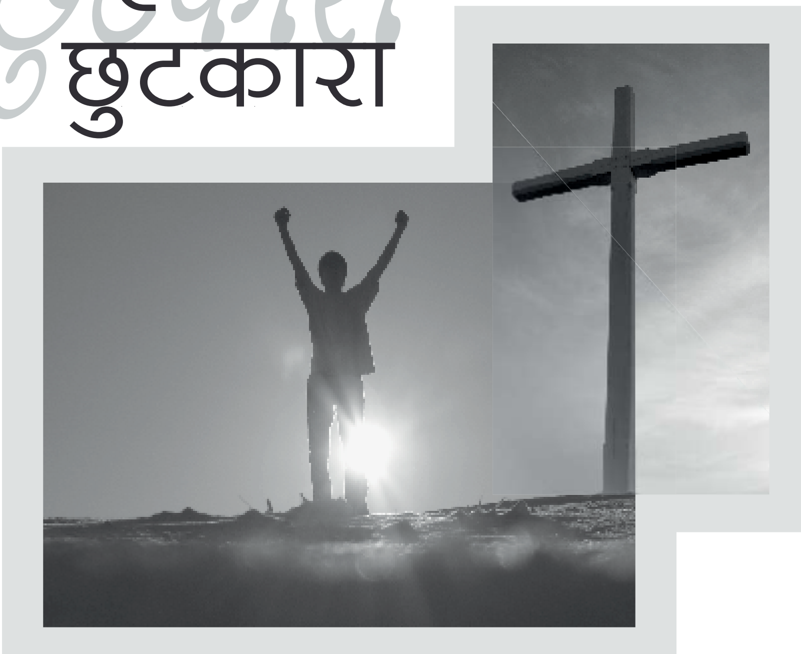

आशीष रायचूर

मुद्रण और वितरणः **ऑल पीपल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क, बेंगलोर**
प्रथम संस्करण जानवरी 2011

अनुवाद एवं प्रूफ रीडिंग : सुनील एस. लाल
मुखपृष्ठ एवं ग्राफिक्स डिज़ाइन : करुणा जेरोम, बाईफेथ डिज़ाइन्स

Contact Information:
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org

इस्तेमाल किए गए बाइबल के संदर्भ पवित्र बाइबल से लिए गए हैं।

निशुल्क वितरण हेतु
इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क पुस्तक के द्वारा आशीष पाई है, तो हम आपको निमंत्रित करते हैं कि ऑल पीपल्स चर्च की निःशुल्क प्रकाशन सामग्री की छपाई और वितरण में सहायता करने हेतु आर्थिक रूप से हमें योगदान दें। धन्यवाद!

(Hindi book - Our Redemption)

हमारा छुटकारा

विषय सूची

1.	हमारा छुटकारा देने वाला जीवित है	1
2.	हमारा छुटकारा	13
3.	हमारे छुटकारे के लाभ	24
4.	अपने छुटकारे के लाभों को अपनाना	36

1

हमारा छुड़ानेवाला जीवित है!

बाइबल रहित संसार की कल्पना कीजिए । इस विश्व के परमेश्वर के लिखित प्रकाशन रहित संसार की कल्पना! तब आप की परमेश्वर के विषय में क्या समझ होती? यदि संसार बाइबल रहित होता तो क्या आप सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर में विश्वास करते, क्या आप एक उद्धारकर्त्ता, एक छुटकारा देने वाले की आवश्यकता महसूस करते, एक ऐसे व्यक्ति का जो हमें पाप एवं उसके परिणामों से स्वतन्त्र करने के लिए "कीमत चुकाए?"

अय्यूब की पुस्तक-एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण

ऊज देश में अय्यूब नाम का एक पुरुष था। वह निर्दोष, खरा तथा परमेश्वर का भय माननेवाला था और बुराई से दूर रहता था" (अय्यूब 1:1)।

अय्यूब एक ऐसा व्यक्ति था जो मूसा के द्वारा दी गयी व्यवस्था से पूर्व इस पृथ्वी पर रहता था। बाइबल के छात्र एवं इतिहासकार बताते हैं कि न तो उस समय की निश्चयता है जब अय्यूब रहता था और न ही अय्यूब की पुस्तक की लेखन तिथि के विषय में कुछ निश्चित रूप से कहा जा सकता है। यहूदी रीति-रिवाज, पर्व और मूसा की व्यवस्था आदि के संदर्भ के अभाव में कहा जा सकता है कि वह व्यवस्था के दिए जाने से पूर्व था। हम देख सकते हैं कि अय्यूब लगभग मसीह के इस संसार में आने से 2000 वर्ष पूर्व था। यदि वह अय्यूब वही व्यक्ति है जिसकी चर्चा उत्त्पति 46:13 में की गई है, जो इस्साकार का पुत्र है, जो याकूब का तीसरा पुत्र है। फिनीस डेक (क्ंमे ।ददवजंजमक त्मिमितमदबम ठपइसम)के अनुसार अय्यूब की मृत्यु मिस्त्र के निर्गमन के 15 वर्ष पहले

हुई। डेक कहते हैं कि अय्यूब के अनुभवों की घटनाओं का समय लगभग 1845 ईसा पूर्व था। निश्चित समय के बिना यह मानना उचित होगा कि अय्यूब मूसा की व्यवस्था दिए जाने से पूर्व था और उत्पति, निर्गमन, लैव्यवस्था, गिनती और व्यवस्थाविवरण की पुस्तकों के लिखे जाने से पूर्व था।

परमेश्वर के बिना किसी लिखित प्रकाशन के यह जानना कितना रूचिकर है कि अय्यूब और उसके मित्रों की समझ, जिसे नूह, इब्राहीम, इसहाक और याकूब ने प्राप्त किया था, पीढ़ी–दर–पीढ़ी करके संचारित की गयी। सीमित सूचनाओं के अनुसार विचार करते हुए हमें आश्चर्य होता है जब हम परमेश्वर की गहन समझ, जिसे अय्यूब की प्राचीनतम् कहानी में प्रकट की गई है, पढ़ते हैं।

छुटकारा–जिसे आरम्भिक काल में समझा जाता था

अय्यूब की पुस्तक एक ऐसे भक्तजन के अनुभवों का लेखा है, जो शैतान के आक्रमण में आ गया। शैतान को अनुमति दी गई की वह अय्यूब के विरुद्ध दुष्ट योजनाओं को पूरा करे, उसकी संतान के जीवनों को नाश करे, उसकी सम्पति को नाश करे और अय्यूब को दुखदायी घावों से पीड़ित करे। इस समय अय्यूब के तीन मित्र एलीपज, बिलदद और सोफर उसके जीवन में आयी विपत्तियों को सुनकर उसे सांत्वना देने आये। उन तीनों ने एक ही बात पर तर्क किया कि उसके व्यक्तिगत पापों के कारण उसके जीवन में विपत्तियों आयी हैं। यद्यपि अय्यूब ने अपनी धार्मिकता और अटूट विश्वास परमेश्वर में व्यक्त किया। चौथा व्यक्ति एलीहू नामक जो उससे मिलने आया उसने अपना तर्क प्रकट किया। एलीहू ने कहा कि मनुष्य की धार्मिकता परमेश्वर के सम्मुख कुछ भी नहीं है और उसके मार्ग मनुष्य की समझ से बाहर हैं। जब अय्यूब के तीन मित्र अपने वाद–विवाद समाप्त कर चुके तब एलीहू ने अपने विचार प्रस्तुत किए। तब परमेश्वर बोला और अय्यूब के ध्यान को अपनी सर्वश्रेष्ठता और महानता की ओर आकर्षित किया। परमेश्वर ने अय्यूब

के तीनों मित्रों, एलीपज, बिलदद और सोफर को झिड़क दिया। "तुमने मेरे दास अय्यूब से मेरे विषय में और खराई के विषय में बात नहीं कही" (अय्यूब 42:8)। तब परमेश्वर ने अय्यूब के जीवन में हस्तक्षेप करके उसकी परिस्थितियों को बदला और बहुत आशीषित किया।

मानवीय तर्क जो मनुष्य के कष्टों के बारे में हैं, जिन्हें अय्यूब की पुस्तक में पाते हैं, उन मानवीय तर्कों के मध्य हम बहुमूल्य आत्मिक सत्यों को भी पाते हैं। हर एक बात जो इन व्यक्तियों ने कही थी, वह पूर्णतः ठीक नहीं पायी गयी जब परमेश्वर के वचन की समझ के साथ उसका मूल्यांकन किया गया। यद्यपि जो कुछ उन्होंने कहा वह भी पूर्णतः गलत नहीं था। यह सम्भव है कि कुछ ज्ञान जो उनके पास था वह आध्यात्मिकता से प्रेरित हो।

[नोटः ध्यान दीजिए वचन हमें बताता है कि परमेश्वर हमारे जीवन के दिन-प्रतिदिन के कार्यों में हमें समझ प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, यशायाह 28:23-29 संकेत करती है कि परमेश्वर ही है जिसने मनुष्य को खेती करना सिखाया]

यह जानना रूचिकर है कि किस प्रकार इन लोगों ने एक उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता को महसूस किया जो जीवन की विपत्तियों का उत्तर है। अय्यूब और एलीहू ने कुछ महत्वपूर्ण बातें छुटकारे के विषय में प्रकट की हैं। इस बाइबल अध्ययन में हम अपना ध्यान छुटकारे की समझ जो अय्यूब की पुस्तक में प्रकट की गई है, पर विचार करेंगे।

एलीहू की समझ

"निश्चय परमेश्वर तो एक बार बोलता है, वरन् दो बार, पर लोग ध्यान नहीं देते स्वप्न में, रात्रि के दर्शन में, जब लोगों को गहरी नींद आती है, और वे बिछौने पर सोए रहते हैं, तब वह उनके कान खोलता तथा उनकी शिक्षा पर मुहर लगाता है, कि मनुष्य को उसके दुराचरण से अलग करे, और उसको घमण्ड से दूर रखे वह उसके प्राण को गड्ढे से बचाता है और

उसके जीवन को तलवार की मार से मनुष्य को उसके बिछौने पर पीड़ा से और उसकी हड्डियों में लगातार होनेवाली वेदना से ताड़ना दी जाती है। जिससे उसका जीवन रोटी से और उसका प्राण मनपसंद भोजन से घृणा करता है। उसका मांस सूखकर दिखाई तक नहीं देता, और उसकी न दिखने वाली हड्डियों दिखने लगती है। तब उसका प्राण गड्ढ़े के समीप पहुँच जाता है और उसका जीवन मृत्यु लाने वालों के निकट पहुँच जाता है। यदि उसके लिए हजारों स्वर्गदूतों में से कोई एक मध्यस्थ हो जो मनुष्य को स्मरण दिलाए कि उसके लिए क्या उचित है। तो वह उस पर अनुग्रह करके कहे, उसे गड्ढ़े में जाने से छुड़ा ले, मुझे उसकी छुड़ौती का दाम मिल गया है, उसकी देह शिशु की सी कोमल हो जाएगी वह अपनी जवानी के दिनों में लौट जाएगा तब वह परमेश्वर से प्रार्थना करेगा। वह हर्षित होकर उसके मुख का वर्णन करेगा और उससे अपनी धार्मिकता पुनः प्राप्त कर लेगा। वह मनुष्यों के सामने गाएगा और कहेगा मैंने पाप किया है और सच्चाई को उलट-पुलट कर दिया है, परन्तु उसका बदला मुझे नहीं दिया गया। उसने मेरे प्राण को गड्ढ़े में जाने से बचाया है, मेरा जीवन प्रकाश को देखेगा देख, परमेश्वर मनुष्यों के साथ ये सब काम बहुधा किया करता है कि उसके प्राण को गड्ढ़े से बचाया जाए, जिससे वह जीवन के प्रकाश से प्रकाशित हो जाए" (अय्यूब 33:14-30)।

एलीहू ने अय्यूब से बात करने के लिए अपनी बारी की प्रतीक्षा की। वह उन तीनों मित्रों से छोटा था जो अय्यूब को शान्ति देने आए थे। जैसे ही एलीहू ने बोलना आरम्भ किया, उसने ईश्वरीय प्रेरणा पर अपने आप को निर्भर किया। उदाहरण के लिए उसके आरम्भिक बातों पर ध्यान दीजिए: "मैं तो आयु में बहुत छोटा हूँ और तुम बड़े हो इसलिए मैं संकोच करता रहा और तुम्हें अपना विचार बताने से डरता था। मैंने सोचा जो आयु में बड़े हैं वे ही बोलें तथा जो बहुत वर्ष के हैं वे ही बुद्धि की बातें सिखाएं। परन्तु यह तो मनुष्य में आत्मा के द्वारा ही है और सर्वशक्तिमान की श्वास ही समझ देती है। बुद्धिमान केवल बड़ी आयु

वाले ही नहीं होते नवयोद्धा भी न्याय को समझते हैं" (अय्यूब 32:6–9)। बाद में जब परमेश्वर बोला और अय्यूब के तीनों मित्रों एलीपज, बिलदद, सोफर को झिड़का परन्तु उसने एलीहू को नहीं डाँटा।

जब एलीहू ने अय्यूब से वाद–विवाद करना आरम्भ किया तब परमेश्वर पर अन्यायी होने के दोषारोपण पर उसे झिड़का। ऊपर दिये गए अंश में एलीहू इस बात को प्रस्तुत करता है कि जैसे परमेश्वर मनुष्य से स्वप्नों और दर्शनों के द्वारा बातचीत करता है तथा कैसे वह उन्हें कुमार्ग से अपनी ओर मोड़ता है। यदि एक व्यक्ति बीमार है। वह मृत्यु की ओर अग्रसर होता जा रहा है। ऐसे में एक मसीही विश्वासी आकर उसे सही मार्ग दिखाए और उससे पश्चात्ताप कराकर परमेश्वर की ओर मोड़े। यदि वह व्यक्ति पश्चात्ताप करे तब परमेश्वर कहता है कि "वह उस पर दया करेगा और उसे गड्ढ़े में जाने (विनाश होने से) बचा लेगा क्योंकि परमेश्वर ने इस व्यक्ति के लिए कीमत चुकाई है"(अय्यूब 33:24)।

फिरौती का अर्थ है छुटकारे हेतु कीमत चुकाना। जब किसी बन्दी व्यक्ति को स्वतंत्र करने के लिए जो कीमत दी जाती है तो उसे फिरौती कहते है। उनकी दासता से स्वतन्त्रता की क्रिया को छुटकारा कहते है। प्रायश्चित द्वारा मुक्ति का कार्य। पद 33:24 में इब्रानी शब्द शवचीमतश (strongs's रु 3724) जो इसके मूल शब्द शंचीमतश (strongs's रु 3722) से निकला है का अर्थ "छुटकारे हेतु कीमत चुकाना"– पापों को ढाँपना, पापों से निवृति, पापों से शोधन एवं संतुष्ट करना है।

यह रूचिकर बात है कि 'छुटकारे की कीमत चुकाने' की धारणा को आरम्भ से ही समझा गया। यह जानना और भी रोचक है कि यह कार्य एक व्यक्ति को बीमारी एवं विनाश से बचाकर उसे आशीषित करता है। "गड्ढ़ा" शारीरिक एवं आत्मिक विनाश दोनों को प्रकट करता है।

मुझे छुड़ौती का दाम मिल गया है

एलीहू परमेश्वर के द्वारा रचे गये "फिरौती के दाम" की चर्चा करता है जिसे परमेश्वर ने पीड़ित व्यक्ति के लिए रचा है। हम छुड़ौती-प्रायश्चित की आशीष के विषय में निम्न प्रकार से अध्ययन कर सकते हैं:

तब परमेश्वर उस पर दयावन्त हुआ (पद 24)

चूँकि परमेश्वर ने फिरौती-एक छुटकारे की कीमत का प्रबन्ध किया है, अतः वह पीड़ित व्यक्ति को अनुग्रह दे सकता है। परमेश्वर उस व्यक्ति को स्वीकार करता है जो पहले पापमय जीवन बिताता था। लेकिन अब उसे अनुभव हुआ कि वह पापी है और प्रायश्चित करके अपने कुमार्ग से परमेश्वर की ओर फिरता है। परमेश्वर के छुटकारे की योजना उस व्यक्ति के पापों के न्याय का पूरा-पूरा मूल्य चुकाती है। चूँकि परमेश्वर के न्याय की संतुष्टि हो चुकी है। अतः वह अपना अनुग्रह मनुष्य को देता है। परमेश्वर के द्वारा चुकाए गए मूल्य के कारण ही हम पर अनुग्रह किया गया है।

उसे गड्ढ़े में जाने से छुड़ा लेता है (पद 24)

छुड़ौती का दाम प्राप्त करने और अपने अनुग्रह के परिणामस्वरूप परमेश्वर आज्ञा देता है कि मानव शारीरिक विनाश से बचाया जाए। यद्यपि बीमारी के कारण वह व्यक्ति मृत्यु के पथ पर है। चूँकि परमेश्वर ने छुड़ौती का दाम दे दिया तथा अपना अनुग्रह किया है। अतः अब इस मनुष्य को मरने की आवश्यकता नहीं है। यह व्यक्ति भजनकार की तरह कह सकता है, "मैं मरूँगा नहीं वरन् जीवित रहूँगा और यहोवा के कार्यों का वर्णन करता रहूँगा" (भजनसंहिता 118:17)। 'छुड़ाने' शब्द का अनुवाद इब्रानी में 'Pada' (Strong's # 6308) किया गया है। इसका साधारण अर्थ है छुड़ाना, स्वतन्त्र करना एवं दाम देकर छुड़ाना। शारीरिक मृत्यु से छुटकारा पाना छुड़ौती के दाम की एक आशीष है। इसका अर्थ यह नहीं कि हम कभी मरेंगे नहीं। हर एक व्यक्ति को एक दिन मरना है (इब्रानियों 9:27)। तौभी उचित यह है कि हम पूर्ण आयु के होकर मरें।

समय के आ जाने पर जैसे पूले जमा किए जाते हैं वैसे ही तू भी पूरी आयु का होकर कब्र में पहुँचेगा (अय्यूब 5:26)।

उसकी देह शिशु की सी कोमल हो जायेगी और वह अपनी जवानी के दिनों में लौट जायेगा (पद 25)

शारीरिक चंगाई एवं स्वास्थ्य भी छुटकारे के दाम की आशीषें हैं। वह व्यक्ति जो बीमार था अब स्वस्थ हो गया है और उसे सामर्थ मिल गई है। छुटकारे के दाम के कारण परमेश्वर ने हमारे सारे पापों को क्षमा किया है और हमारे सारे रोगों से चंगा किया है! हल्लेलूयाह!!

वह परमेश्वर से प्रार्थना करता है और वह उसे ग्रहण करता है (पद 26)

प्रार्थना का उत्तर भी छुड़ौती के दाम की आशीष है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। "परन्तु तुम्हारे अधर्म के कर्मों ने ही तुम्हें तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुख तुमसे छिप गया है जिससे वह नहीं सुनता" (यशायाह 59:2)। पाप परमेश्वर को हमारी प्रार्थनाओं को सुनने व उत्तर देने से रोकता है। परमशेवर ने छुड़ौती का दाम चुकाया है। इसलिए जब हम पश्चात्ताप करते हैं तब हमारे सारे पाप हटा दिए जाते हैं। हम परमेश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं और वह हमारे पक्ष में प्रार्थना का उत्तर देता है!

वह परमेश्वर के मुख को देख कर आनन्द से पुकार उठता है (पद 26)

छुटकारे का दाम चुकाने के द्वारा ही हमारा परमेश्वर के साथ एक स्वस्थ, विश्वसनीय और आनन्दित व्यक्तिगत सम्बन्ध सम्भव हो गया है। अब हम पाप के दास नहीं हैं । लेकिन छुटकारा प्राप्त कर के परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियां बन गए हैं जो परमेश्वर को "हे अब्बा", "हे पिता" कह कर पुकारते हैं। परमेश्वर के साथ हमारी पूर्ण शान्ति, एकता, मित्रता एवं संगति हैं।

परमेश्वर उसे उसकी धार्मिकता पुनः लौटा देता है (पद 26)

परमेश्वर इस व्यक्ति को उसके पूर्वस्थ स्थान पर खड़ा करता है। परमेश्वर के साथ सही होने का अर्थ है कि वह हमें अब अपराधी नहीं ठहराता है। हम स्वर्ग के न्यायासन के सम्मुख समस्त दोष से मुक्त हैं। हमें पूर्ण क्षमा प्राप्त हुई है। हम परमेश्वर के सम्मुख ऐसे खड़े हैं मानो हमने कभी पाप ही न किया हो। हम अपने सिर को ऊँचा उठा सकते हैं। हम परमेश्वर के सम्मुख भयभीत और दोषी होकर नहीं आते परन्तु साहस और विश्वास के साथ आते हैं। यह आशीष हमें छुटकारे की कीमत चुकाने के द्वारा प्राप्त हुई है।

उसने मेरे प्राण को गड्ढ़े में जाने से बचाया है और मैं जीवित रहूँगा तथा मेरा जीवन प्रकाश को देखेगा (पद 28)

छुटकारा (इब्रानी भाषा के 'Padah' शबद Strong's रु 6299 से निकला है) अनन्तकालीन विनाश से छुटकारे हेतु कीमत चुकाने के द्वारा सम्भव हुआ है। एक पापी व्यक्ति जो मार्ग से भटक गया था, पश्चात्ताप करके अनन्तकाल के जीवन में प्रवेश कर सकता है, जहाँ वह आनन्द और ज्योति में रहेगा।

ये सात आशीषें "छुटकारे की कीमत चुकाने" के फलस्वरूप हमें प्राप्त हुई हैं जैसा कि अय्यूब 33:14-30 में प्रस्तुत किया गया है। कितना महान् प्रकाशन है! एलीहू ने इन बातों को उस से पूर्व समझ लिया था जब परमेश्वर ने पुराने नियम में अपने लोगों से बातें करना आरम्भ किया। यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा मसीह के आने के विषय में जो भविष्यवाणी की गई थी उससे पूर्व एलीहू इन बातों को समझता था (यशायाह 53)। यह वास्तव में आश्चर्यजनक बात है!

छुटकारे की कीमत समस्त मानवजाति के लिए दी गई है

"क्योंकि परमेश्वर एक ही है और परमेश्वर तथा मनुष्यों के बीच एक ही मध्यस्थ भी है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है। जिसने अपने आपको सब

की छुड़ौती के दाम में दे दिया और इसका साक्षी उचित समय पर दी गई" (1 तीमुथियुस 2:5, 6)।

लगभग दो हजार वर्ष के बाद जब समय पूरा तब परमेश्वर ने "छुड़ौती का दाम" चुकाने का प्रबन्ध किया। यह स्वयं यीशु मसीह था जो मनुष्य बना। केवल यीशु ही फिरौती का दाम देने के योग्य था। उसने स्वयं अपना जीवन समस्त मानव जाति के छुटकारे हेतु दे दिया।

प्रत्येक मानव ने पाप किया है। पाप का परिणाम मनुष्य को भुगतना पड़ता है। कुछ परिणाम शीघ्र ही झेलने पड़ते हैं और कुछ इस जीवन के बाद झेलने पड़ेंगे। पाप के कारण कष्ट और विनाश आते हैं। पाप के कारण ही समस्त मानवजाति शैतान की दासता में चली गई। शैतान अपने दुष्ट कार्यों के द्वारा उनको दबाता और फाड़ता है। लेकिन शुभ संदेश यह है कि हमारे छुटकारे का दाम चुकाया है ताकि हम पाप और शैतान के बन्धन से छूट जायें। स्वयं यीशु मसीह ने अपने आपको छुटकारे के दाम में दे दिया ताकि हम पाप और शैतान की दासता से स्वतन्त्र हो जायें। प्रत्येक व्यक्ति जो आज इस पृथ्वी पर जीवित है उसे यह मालूम होना आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति फिरौती के दाम की यह आशीष प्राप्त कर सकता है।

अय्यूब की समझ

"मुझे तो निश्चय है कि मेरा छुड़ाने वाला जीवित है और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा और अपनी खाल के इस प्रकार नाश हो जाने के बाद भी मैं इस शरीर में होकर परमेश्वर का दर्शन पाऊँगा। जिसे मैं स्वयं देखूँगा, जिसे मैं अपनी आँखों से देखूँगा, दूसरा कोई और नहीं। मेरा हृदय भीतर ही भीतर व्याकुल हो रहा है" (अय्यूब 19:25-27)।

अय्यूब की पुस्तक में एक बहुत महत्वपूर्ण बात है जो अय्यूब 19:25-27 में लिखी गयी है। वह अपने गहन कष्टों और प्रश्नों के दौरान

क्या 'क्यों' 'कैसे' 'कब तक' ऐसा होता रहेगा आदि, जिनका उसके पास कोई उत्तर नहीं था। उसके मुख से निकले ये शब्द स्मरण करने योग्य हैं। इससे भी अधिक यह आश्चर्य चकित करनेवाली बात है कि अय्यूब को वह प्रकाशन और आत्मिक सत्य की समझ उस समय कैसे प्राप्त हुई जब बाइबल नहीं थी तथा परमेश्वर का लिखित प्रकाशन नहीं था!

अय्यूब अपने उद्धारकर्त्ता, जो उसे स्वतन्त्र करेगा, में विश्वास करता है और कहता है कि वह जीवित है। वह अपने इस विश्वास की चर्चा करता है कि उसको छुड़ानेवाला शीघ्र ही पृथ्वी पर खड़ा होगा। वह यह भी विश्वास करता है कि यद्यपि उसका यह शरीर नाश हो जायेगा लेकिन फर भी वह आत्मिक शरीर में अपनी आँखों से परमेश्वर को देखेगा। अय्यूब पुनरुत्थान में विश्वास करता था। अनन्तकालीन बातों के विषय में अय्यूब की समझ कितनी खरी एवं कितनी सराहनीय है! यह आश्चर्यजनक बाते है!

छुटकारा-फिरौती की कीमत के परिणामस्वरूप जो स्वतन्त्रता हमें मिली है उसकी आशीषें न सिर्फ तुरन्त मिलनेवाली हैं बल्कि उन्हें हम भविष्य में भी अनुभव करेंगे। ऐसी आशीषें अनन्तकालीन है। यह जानना रुचिकर है कि इब्रानी भाषा का शब्द "छुटकारा देनेवाले" के लिए अय्यूब 19:25-27 में 'हंस' (Strong's # 1350) शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका अर्थ "निकटतम सम्बन्धी छुटकारा देनेवाला" होता है। सम्बन्धी का अर्थ अपने खून के सगे रिश्तेदार से होता है। पूर्वीय देशों के विधान के अनुसार सम्बन्धी का अर्थ 'कुटम्बी' होता है। उसकी यह जिम्मेदारी और अधिकार होता है कि वह अपने किसी भी सम्बन्धी की सम्पत्ति आदि को दाम देकर छुड़ा ले। उसकी यह भी जिम्मेदारी है कि वह अपने कुटुम्ब की विधवा के विवाह का प्रबन्ध करे। ऐसा प्रतीत होता है कि "कुटुम्बी छुटकारा देनेवाले" की प्रथा का प्रचलन बहुत पहले से चला आ रहा था। इसलिए अय्यूब सर्वशाक्तिमान परमेश्वर को अपना सगा कुटुम्बी (व्यक्तिगत) छुटकारा देनेवाला मानता है।

हमारा कुटुम्बी (व्यक्तिगत)-छुटकारा देनेवाला

"और यदि कोई परदेशी या प्रवासी जो तुम्हारे बीच में रहता हो, धनी हो जाए और उसके सामने तेरा भाई दरिद्र होकर अपने आपको उस परदेशी या प्रवासी अथवा परदेशी के वंश के किसी व्यक्ति के हाथ बेच डाले, तो बेचे जाने के बाद उसे फिर छुड़ाए जाने का अधिकार है, उसके भाइयों में से कोई भी उसे छुड़ा सकता है, उसका चाचा, चचेरा भाई या उसका कोई भी कुटुम्बी उसे छुड़ा सकता है, वह अपने खरीदने वाले के साथ अपने बेचे जाने के वर्ष से जुबली के वर्ष तक की गिनती करे। उसके बेचे जाने का मूल्य वर्षों की गिनती के अनुसार हो, अर्थात् उसके साथ उसका मूल्य मजदूर के दिनों के अनुसार होगा" (लैव्यवस्था 25:47-50)।

कुटुम्बी (व्यक्तिगत) उद्धारकर्त्ता का विधान बाद में इस्राएल में प्रचलित हो गया। उदाहरण के लिए लैव्यवस्था के इस भाग में हमें विस्तृत निर्देश दिए गए है। Vine's Complete Expository Dictionary इस प्रकार वर्णन करती है: "एक निर्धन व्यक्ति अपने आपको किसी इस्राएली के हाथों में बचे सकता है (लैव्यवस्था 25:39) अथवा एक पददेशी को जो इस्राएल में रहता है, बेच सकता है (लैव्यवस्था 25:47)। अब 'उसको छुड़ाने' की जिम्मेदारी उसके सबसे निकटतम सम्बन्धी की होती है जैसे उसका भाई, चाचा, चचेरा भाई अथवा उसके खून का रिश्तेदार जो उसके स्वयं के परिवार से हो (लैव्यवस्था 25:25,48-49)। एक ऐसा व्यक्ति (कुटुम्बी) जो आर्थिक कठिनाइयों में दबे हुए को छुड़ाता है वह छुड़ाने वाला कहलाता है। जैसा रूत 2:20 में लिखा है। व्यवस्थाविवरण 19:6 में छुटकारा देनेवाले को अपने सम्बन्धी की हत्या के खून का बदला लेने का अधिकार है। इस प्रकार इसे 'खून का बदला लेनेवाला' कहा जाता है।

अय्यूब कहता है, "मेरा छुड़ानेवाला (कुटुम्बी छुड़ाने वाला) जीवित है"। जब परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया तो उसने मनुष्य को अपने परिवार के एक सदस्य के रूप में रखा (लूका 3:38)। इसलिए मनुष्य

परमेश्वर की सम्पत्ति थी। लेकिन पाप के कारण मनुष्य ने अपने आप को पाप की दासता में बेच दिया। तब यीशु मानव रूप में अपने भाइयों की समानता में आया (इब्रानियों 2:14-17), वह हमारा कुटुम्बी-छुड़ानेवाला बनकर आया। वह क्रूस पर मर गया और जीवन को बलिदान करके "फिरौती का दाम" चुका कर हमारी स्वतन्त्रता को फिर से खरीद लिया। वह तीसरे दिन मुर्दों मे से जीवित हो उठा ताकि वह बहुतों में पहलौठा ठहरे (रोमियों 8:29)। आज वह जीवित है। हमारा अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता है!

मनन हेतु प्रश्नः

1. वे कौन से सम्भव क्षेत्र हो सकते हैं जिनके द्वारा अय्यूब और एलीहू को परमेश्वर की एक छुड़ाने वाले के रूप में समझ प्राप्त हुई?
2. नये नियम के उन भागों का उल्लेख करें जो "छुटकारे की सात आशीषों" के विषय में यह प्रकट करते हैं कि ये आशीषें यीशु मसीह के द्वारा हमारे लिए उपलब्ध हैं।
3. प्रभु यीशु के विषय में चर्चा कीजिए कि वह हमारा "कुटुम्बी छुड़ाने वाला" है।

2

हमारा छुटकारा

बाइबल हमें बताती है "समस्त संसार शैतान के अधीन है" (1 यूहन्ना 5:29)। हम ऐसे वातावरण में रह रहे हैं जो अंधकार की सामर्थ, शैतान और उसकी सेनाओं के द्वारा प्रभावित है। अंधकार के कार्य विभिन्न रूपों में हमारे चारों ओर प्रकट होते हैं, जैसे पाप, रोग, विनाश, निर्धनता, भ्रष्टाचार आदि। ऐसे कामों की सूची और भी बढ़ाई जा सकती है। चाहे हम संसार के किसी भी भाग में रहते हों अथवा कोई भी व्यवसाय क्यों न करते हों जैसे, सेवक, चिकित्सक, व्यापारी, मिस्त्री, अध्यापक, छात्र आदि, हम प्रतिदिन शैतान के कार्यों का सामना करते हैं। शैतान तथा उसकी सेनाऐं मानव तथा संसार को प्रभावित, नियंत्रित एवं राज्य करती हैं। इन सब बातों के चलते बाइबल एक सामर्थी सत्य प्रकट करती है। बाइबल हमें सिखाती है कि प्रत्येक मनुष्य जो यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा बचाया गया है वह शैतान के नियंत्रण से स्वतन्त्र किया गया है। विश्वासी जन के लिए यह सम्भव है कि वह शैतान के कार्यों पर विजय प्राप्त करे प्रत्येक व्यक्ति जो 'मसीह में' है उसे शैतान के अधीन रहने की आवश्यकता नहीं है!

एक ओर मसीह की देह (कलीसिया) का बड़ा भाग इस सत्य से अनिभिज्ञ है। संसार की बहुत सी कलीसियाओं के विश्वासियों को यह कभी नहीं बताया गया कि वे वास्तव में एक विजयी जीवन जी सकते हैं। उनको नहीं सिखाया गया कि वे ऐसा जीवन जीने के लिए क्या करें जहाँ वह शैतान के कार्यों को झिड़क कर उस पर विजय प्राप्त करें। दूसरी ओर मसीह की देह का बड़ा भाग ऐसा भी है जिन्होंने इन सत्यों को भी सुना है। उन्होंने टेप को सुना है, पुस्तकों को पढ़ा है, मसीही सभाओं में भाग लिया है, प्रकाशन पाया है तौभी वे इन सत्यों को अपने

दिन–प्रतिदिन के जीवन अनुभवों में नहीं उतार पाते। हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग इस सत्य को जानें। हम यह भी विश्वास करते हैं कि सत्य, जो उसके वचन में प्रस्तुत किये गये हैं, परमेश्वर के लोगों को सिखाएं जाएं और उन्हें शिक्षित किया जाए। हम यह भी विश्वास करते हैं कि जो सत्य वचन में प्रकट किए गये हैं उनका हमारे प्रतिदिन के जीवनों में अपना प्रभाव है। जो सत्य वचन में प्रकट किये गये हैं वह केवल प्रचार करने, सिखाने और उनके विषय में लिखे जाने के लिए ही नहीं हैं, परन्तु वे हमारे प्रतिदिन के जीवन के अनुग्रह के भाग होने के लिए प्रस्तुत किये गये हैं।

इस अध्ययनक्रम को जारी रखने का हमारा उद्देश्य है कि हम शैतान के नियन्त्रण से अपनी स्वतन्त्रता को समझें और इन बातों को अपने प्रतिदिन के जीवन में अनुभव करना सीखें।

छुटकारा पाने का क्या अर्थ है?

“उसने तो हमें अन्धकार के साम्राज्य से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया है जिसमें हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है” (कुलुस्सियों 1:13,14)।

कुलुस्सियों 1:13 में प्रकट करता है कि परमेश्वर ने हमें अधंकार के राज्य से निकाल कर अपने पुत्र यीशु मसीह के राज्य में प्रवेश कराया है, जहाँ हम पूर्ण स्वतन्त्रता अनुभव करते हैं। जिस क्षण हम यीशु में विश्वास के द्वारा बचाये जाते हैं, उसी क्षण हम शैतान के नियन्त्रण एवं उसके दावे और अधिकार से बाहर आ जाते है। चूँकि हम मसीह में हैं, अत: शैतान का अधिकार हमारे ऊपर से समाप्त हो जाता है, तथा उसका अधिकार एवं राज्य हमारे जीवनों से हट जाता है। मीरास का यह भाग “पवित्र लोगों के साथ ज्योति के राज्य में” जिसका हम आनन्द उठा सकते है। (कुलुस्सियों 1:12)। एक विश्वासी को शैतान और उसके कार्यों की अधीनता में रहने की आवश्यकता नहीं है। यह कुलुस्सियों

1:14 इस पर विचार को आगे बढ़ता हुआ प्रकट करता है कि यीशु मसीह में "हमारा छुटकारा" है।

नए नियम में छुटकारे से सम्बन्धित दो यूनानी भाषा के शब्द प्रयोग किए गए हैं। पहला शब्द 'agoridzo' (जो कुरिन्थियों 6:20, 7:23, प्रकाशितवाक्य 5:9 में प्रयोग किया गया है)। दूसरा शब्द 'exagoridzo' (जो गलातियों 3:13, 4:4, 5 में प्रयोग किया गया है)। ये दोनों शब्द दासता के बाजार एवं बन्धुवाई के बाजार से स्वतन्त्र करने हेतु खरीदने की क्रिया को प्रकट करते हैं। 'lutro' शब्द (जिसे तीतुस 2:14, 1 पतरस 1:18 में प्रयोग किया गया है) तथा 'apolutrosis' (जो इफिसियां 1:7, कुलुस्सियों 1:14 में प्रयोग किया गया है) एक बन्धुए को छुटकारे की कीमत चुका कर उसे स्वतन्त्र कराने और उसकी प्राथमिक दशा में पहुँचाने के सन्दर्भ में प्रयोग किया गया।

छुटकारे की धारणा निम्नलिखित विचारों को प्रकट करती है:

- हम एक समय बन्धुवाई में थे जिससे हम अपने आप को स्वन्तत्र नहीं कर सकते थे।
- हमारी स्वतन्त्रता को खरीदने के लिए एक दाम चुकाया गया है।
- अब हम "वैधानिक रूप" से स्वतन्त्र हैं और हमारे पूर्व स्वामी को हमारे जीवन पर अब कोई अधिकार नहीं।

प्रथम मनुष्य आदम और हव्वा जिन्हें परमेश्वर ने रचा और पृथ्वी पर अधिकारी ठहराया। परमेश्वर ने उनसे कहा कि इस पृथ्वी को अपने वश में कर लो और जो कुछ इसमें है उस पर अधिकार कर लो (उत्पत्ति 1:26-28)। ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर का इरादा यह था कि आदम और हव्वा की अपने आने वाली पीढ़ियां इस अधिकार को प्राप्त करें। लेकिन वही पुराना साँप अर्थात् शैतान अपनी धूर्त धोखेबाजी से उनके बीच में आया और उस अधिकार को ले लिया जो परमेश्वर ने

आदम और हव्वा को दिया था। शैतान की आज्ञा मानने के द्वारा उन्होंने अपने आपको उसके अधीन कर दिया। वह अधिकार मनुष्य को दिया गया था, जो अब शैतान को हस्तातरित कर दिया गया है। इसी कारण परमेश्वर के वचन में विभिन्न स्थानों पर "शैतान को इस युग का ईश्वर कहा गया है" (2 कुरिन्थियों 4:4), "आकाश के राज्य का स्वामी कहा गया" (इफिसियों 2:2)। यीशु ने शैतान को "इस संसार का राजकुमार" कह कर संबोधित किया (यूहन्ना 12:31, 14:30)। जब शैतान के द्वारा जंगल में यीशु की परीक्षा ली गयी तब बाइबल इस प्रकार बताती है, "तब शैतान ने उसे ऊपर ले जाकर पल भर में संसार के सारे राज्यों को दिखा दिया, और उससे कहा, "यह सारा अधिकार और इसका वैभव मैं तुझे दे दूँगा, क्योंकि यह मुझे दिया गया है और मैं जिसे चाहता हूँ उसे देता हूँ। इसलिए यदि तू मुझे दण्डवत करे तो यह सब तेरा हो जाएगा" (लूका 4:5-7)। यहाँ यीशु मसीह ने शैतान के संसार के स्वामित्व के दावे को निरस्त नहीं किया।

शैतान ने इस संसार और मानव-जाति को वश में किया है। उसने मनुष्यों को दबाना और संसार को दुष्टता से भरना आरम्भ किया। पाप, रोग तथा अन्य प्रकार की दुष्टता ने इस संसार को भर दिया है। यह सारी वस्तुएं परमेश्वर की आरम्भिक योजना में सम्मिलित नहीं थीं। एक शिक्षित मस्तिष्क में यह बात नहीं समा सकती कि प्रायः बीमारी शैतान का एक कार्य है। (प्रत्येक बीमारी के विषय में ऐसा नहीं है क्योंकि कुछ बीमारियाँ अन्य कारणों से भी हो सकती हैं-जैसे दुर्घटना, लापरवाही एवं हानिकारक आदतों के शिकार होने के परिणामस्वरूप)। इस पृथ्वी पर यीशु मसीह की सेवा के सन्दर्भ में बाइबल बताती है कि वह "भलाई करता और लोगों को चंगा करता और शैतान की शक्तियों से छुड़ाता रहा है" (प्रेरितों के काम 10:38)। उस महिला को जो कुबड़ी थी और इस कारण वह सीधी खड़ी नहीं हो पाती थी, यीशु ने कहा शैतान ने तुझे बन्धन में रखा है (लूका 13:16)।

यीशु मानव-जाति को शैतान के चुंगल और उसके विनाशक कार्यों से छुटकारा देने आया था। बाइबल बताती है "परमेश्वर का पुत्र शैतान के कार्यों को नाश करने के लिए प्रकट हुआ" (1 यूहन्ना 3:8इ)। यही छुटकारे का कार्य अपनी सेवा के दौरान यीशु ने पूरा किया। उसने यह सम्भव कर दिया कि हम शैतान की दासता से छूट जायें। उसने हमें शैतान के अधिकार और नियन्त्रण से स्वतन्त्र किया है। उसने हमें शैतान के विनाशक कार्यों और उसकी अधीनता से निकाला है।

प्रत्येक मसीही छुड़ाया गया व्यक्ति है। इसका अर्थ यह है कि हमें शैतान की दासता से खरीदा गया है। शैतान वैधानिक रूप से मसीही विश्वासी को अपने कार्यों से दबा नहीं सकता। एक समय हम शैतान की दुष्ट दासता में थे। लेकिन अब हम स्वन्त्रत है। एक समय हम अंधकार के राज्य में थे लेकिन अब हम ज्योति के राज्य में है।

हमारा छुटकारा वर्तमान वास्तविकता है। हम भविष्य में शैतान की दासता से छुटकारा पाने की आशा नहीं करते। छुटकारे का दाम पहले ही चुका दिया गया है। हमें स्वन्त्रत कर दिया गया है। अभी और इसी समय जबकि हम अपने जीवन की यात्रा में हैं, हम छुटकारे के समस्त लाभ उठा सकते हैं। जब शत्रु हमारे विरुद्ध पाप की दासता, रोग, आभाव तथा विरोध लाने का प्रयास करता है। तब हम अपने छुटकारे का दावा करके अन्धकार के कामों को झिड़क सकते हैं।

छुटकारा मात्र आत्मवाद का ही एक रुचिकर विषय नहीं है। बल्कि यह एक सत्य है जिसे परमेश्वर का प्रत्येक बालक अनुभव कर सकता है। हम शैतान के कार्यों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। चाहे हम घर, पारिवारिक सम्बन्धों, आर्थिक क्षेत्र, व्यवसायिक क्षेत्र, खतरे, बन्द दरवाजों को खोलने, यीशु मसीह की समानता अथवा परमेश्वर के राज्य के विकास कार्यों में लगे हों, हम यीशु मसीह में अपने छुटकारे का लाभ उठा सकते हैं।

पुराने नियम की रीति पर

"तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, "अब तू देखेगा कि मैं फिरौन से क्या करूँगा; वह विवश होकर उन्हें जाने देगा; वह तो उन्हें अपने देश से बरबस निकालेगा" परमेश्वर ने मूसा से फिर बातें कीं और कहा, "मैं यहोवा हूँ"। मैंने सर्वशक्तिमान परमेश्वर के नाम से इब्राहीम, इसहाक और याकूब को दर्शन दिया, परन्तु यहोवा के नाम से मैं उन पर प्रकट न हुआ। और मैंने उसके साथ अपनी वाचा भी बान्धी है कि वह कनान देश जिस में वे परदेशी होकर रहे, उन्हें दे दूँगा। और इस्राएली जिन्हें मिस्री लोग दासत्व में रखते हैं उनका कराहना सुनकर मैंने अपनी वाचा को स्मरण किया है। इसलिए इस्राएलियों से कह, 'मैं यहोवा हूँ' और तुमको मिस्रियों के बोझ के नीचे से निकालूँगा। मैं तुमको उनके दासत्व से छुड़ाऊँगा। मैं अपनी भुजा बढ़ाकर और न्याय के महान् कार्य करके तुम्हें छुड़ा लूँगा। तब तुमको मैं अपनी प्रजा बनाने के लिए लूँगा। ओर मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँगा; और तुम जान लोगे कि मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूँ जो तुम्हें मिस्रियों के बोझों के नीचे से निकाल ले आया। और मैं तुम्हें उस देश में पहुँचाऊँगा जिसे देने की शपथ मैंने इब्राहीम और याकूब से खाई थी और मैं उसे तुम्हारी मीरास होने का दे दूँगा; मैं यहोवा हूँ" (निगर्मन 6:1-8)।

"मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुमको मिस्र देश से इसलिए निकाल लाया कि तुम उनके दास न बने रहो और मैंने तुम्हारे जुए को तोड़ दिया है और तुमको सीधा खड़ा करके चलाया है" (लैव्यवस्था 26:13)।

परमेश्वर ने इस्राएलियों के साथ पुराने नियम में जो-जो कार्य किए वे नए नियम में यीशु मसीह के देह की सत्यता को प्रकट करते हैं। मिस्र की दासता से छुटकारा हमारी अंधकार की सामर्थ से छुटकारे को प्रकट करती है।

निम्नलिखित वाक्यों पर विचार करें जो परमेश्वर ने मिस्र की दासता से स्वतन्त्रता के विषय में कहे:

- "मैं तुम्हें मिस्त्र देश से निकाल कर लाया हूँ।"
- "अब तुम मिस्त्रियों के दास नहीं हो।"
- "मैंने तुम्हारे जूए को तोड़ दिया है।"
- "मैं तुम्हें अपनी प्रजा बनाऊँगा और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरुँगा।"
- "मैंने तुम्हें सिर उठा कर चलने के योग्य बनाया है।"

आइए हम इन बातों को अपने जीवन में लागू करें:

- परमेश्वर हमें "मिस्त्र" से निकाल कर लाया है। इसका अर्थ है कि वह हमें शैतान और उसकी सेनाओं के नियन्त्रण से निकाल कर लाया है।
- अब हमें शैतान की अधीनता में रहने की आवश्यकता नहीं है।
- शैतान के जुए (बन्धुवाई) जो एक समय हमारे ऊपर थे वे नाश किये गये। परमेश्वर ने उनको तोड़ दिया।
- परमेश्वर ने हमें अपने लोग बना लिया है। अब हम उसके प्रिय पुत्र के राज्य में पाये जाते हैं। वह हमारा परमेश्वर है।
- अब हम "सिर ऊँचा करके" चल सकते हैं। इसका अर्थ है कि हम छुटकारे के लाभ में चल सकते हैं। हम अपने अधिकार को शैतान पर चला सकते हैं, जो एक समय हम पर राज्य करता था।

हमारे छुटकारे की कीमत

"हमें उसमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् हमारे अपराधों की क्षमा, उसके अनुग्रह के धन के अनुसार मिली है" (इफिसियों 1:7)।

"क्योंकि तुम जानते हो कि उस निकम्मे चाल-चलन से जो तुम्हें अपने पूर्वजों से प्राप्त हुआ, तुम्हारा छुटकारा सोने या चाँदी जैसी नाशवान वस्तुओं से नहीं, परन्तु निर्दोष और निष्कलंक मेमने, अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ है" (1 पतरस 1:18,19)।

"तुम्हें कीमत देकर खरीदा गया है" (1 कुरिन्थियों 6:20ए, 1 कुरिन्थियों 7:23ए)।

यीशु मसीह का लहू ही वह कीमत है जो हमारे छुटकारे हेतु दिया गया है। लहू प्रत्येक प्राणी का जीवन है (लैव्यवस्था 17:11)। अतः यीशु का लहू ही इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि उसने अपना जीवन हमारे छुटकारे को खरीदने हेतु दे दिया।

हम अपनी स्वतन्त्रता खरीदने में असमर्थ थे। हमारे जीवन में पाप होने के कारण हमने शैतान को वैधानिक अधिकार दे दिया था, ताकि वह हम पर राज्य करे। इसलिए केवल एक ऐसा व्यक्ति जिसने कभी पाप न किया हो तथा उसके ऊपर शैतान का कोई वैधानिक अधिकार न हो वही अपने आपको हमारी स्वतन्त्रता हेतु अर्पित कर सकता था। यह मसीह ही था जो निर्दोष एवं पाप रहित था। वही हमारा छुटकारा दिलाने वाला बन सकता था।

पाप की "मजदूरी" एवं इसके परिणाम होते हैं। जब तक हमारे पापों की क्षमा हेतु मूल्य नहीं चुकाया गया, तब तक शैतान मानव-जाति पर अपना स्वामित्व बनाये रहा। परमेश्वर ने यह ठहराया कि पाप का मूल्य लहू से चुकाया जाए (लैव्यवस्था 17:11)। अतः जब यीशु ने अपना रक्त हमारे पापों के लिए बहाया तब वही रक्त हमारे छुटकारे का दाम हो गया है। अब मूल्य चुका दिया गया है और शैतान का राज्य हमारे ऊपर से समाप्त हो गया है। वह लोग जो विश्वास के द्वारा कलवरी के क्रूस पर मसीह के द्वारा दिये गये दाम को स्वीकार करते हैं, उन्हें पापों की क्षमा मिलती है। जिस क्षण हम क्षमा किये जाते हैं, उसी क्षण से मसीह में हमारा छुटकारा हो जाता है। वही रक्त जो हमें धोता है, शुद्ध करता है और पापों की क्षमा-दान करता है, हमें शैतान के चंगुल से छुटकारा भी दिलाता है। अतः,"उसमें हमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा और पापों की क्षमा मिलती है" (इफिसियों 1:7)।

यीशु मसीह के द्वारा बहाये गये लहू की कीमत से हमारी स्वतन्त्रता खरीदी गई है। शैतान और उसकी दुष्टात्माएं यीशु मसीह के खून की सत्यता के प्रचार से डरने लगते है। मसीह का लहू अंधकार की शक्तियों को याद दिलाता है कि हमारे पूर्ण छुटकारे हेतु दाम चुका दिया गया है। हमें छुटकारा मिल चुका है।

अब से लेकर अनादि काल तक

"परन्तु जब मसीह आनेवाली अच्छी बातों का महायाजक होकर प्रकट हुआ तो उसने और भी बड़े तथा सिद्ध तम्बू में से होकर प्रवेश किया जो हाथ का बनाया हुआ अर्थात् इस सृष्टि का नहीं और बकरों तथा बछड़ों के लहू द्वारा नहीं, वरन् स्वयं अपने लहू के द्वारा सदा के लिए एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश करके अनन्त छुटकारा प्राप्त किया" (इब्रानियों 9:11-12)।।

यीशु ने हमारा छुटकारा अनन्तकाल तक के लिए किया है। उसने वह सम्पूर्ण कीमत चुकायी है जो सभी कालों के लिए पर्याप्त है। छुटकारा हम आज पा चुके हैं, वह अनन्तकाल के लिए है। जिस क्षण हम बचाये जाते हैं उस क्षण से लेकर अनन्तकाल तक हम छुटकारे के लाभ उठा सकते हैं। इसमें जोड़ने के लिए हम और कुछ भी नहीं कर सकते। शैतान वैधानिक रुप से हमें दुबारा अपना दास नहीं बना सकता है। जब तक कि हम अज्ञानता वश अथवा स्वेच्छा से उसकी अधीनता में न जायें।

वह रक्त जो हमारा छुटकारा सुरक्षित रखता है, महापवित्र स्थान में जो स्वर्ग में है, प्रस्तुत किया गया है। इस कीमत का पूर्ण लेखा-जोखा रखा गया है। यह छुटकारे की कीमत, जो यीशु ने चुकायी है, सदैव स्मरण की जाती रहेगी। शैतान इस तथ्य को बदलने के लिए कुछ भी नहीं कर सकता है।

जिसने हमें स्वतन्त्र किया है वह हमारे महायाजक के रूप में पिता के सम्मुख उपस्थित है। वह कहता है, "मैं जीवित हूँ, मैं मर गया था और देख अब मैं अनन्तकाल तक जीवित हूँ" (प्रकाशितवाक्य 1:18)। हमारा छुटकारा इससे और अधिक वास्तविक, अधिक सुरक्षित और अधिक शाशवत् नहीं हो सकता है क्योंकि, "उसमें (मसीह में) हमारा छुटकारा है"।

परमेश्वर के "छुटकारा पाये गये लोगों" की भाँति जीवन व्यतीत करना

यद्यपि विजय और पराजय के बावजूद भी शैतान को अनुमति दी गयी है कि वह अपनी दुष्ट योजनाओं को पृथ्वी पर जारी रखे। हम जानते हैं कि ऐसा सदैव नहीं होगा। फिर भी जब तक हम इस पृथ्वी पर जीवित हैं, हम प्रतिदिन इस शत्रु का सामना करते हैं जो हमें पुनः अपना दास बनाना चाहता है। यह दासता हमारे चरित्र, मानसिकता, भावुकता, आर्थिक, भौतिक, पारस्परिक सम्बन्ध (विवाह-परिवार), मसीही सेवा अथवा आत्मिक क्षेत्र (प्रभु के साथ हमारी चाल) की हो सकती है। शैतान हमारे जीवनों में प्रवेश करने तथा हमें पुनः पाप की दासता में ले जाने का भरसक प्रयास करता है ताकि हमारे जीवन में प्रवेश करके हमारे जीवन के क्षेत्र को अपने वश में कर ले। हमारे लिए चुनौती है कि हम शैतान के ऐसे प्रयासों का सफलतापूर्वक सामना करें और यीशु मसीह के द्वारा दिये गये छुटकारे का लाभ उठायें।

छुटकारा जो यीशु मसीह में है, वह हमें लाभ प्रदान करता है। उनमें से कुछ लाभ हम इस जीवन में अनुभव कर सकते हैं और कुछ उस समय करेंगे, जब हम उसकी समानता में बदल जायेंगे। लेकिन जब तक हम इस पृथ्वी पर हैं, हम उन लोगों की भाँति, जो प्रभु के लिए खरीदे गए लोग हैं, जीवन बिताने के लिए क्या करना है? यीशु मसीह में हमें छुटकारे की आशीषों से हमारा जीवन किस प्रकार भर सकता है? व्यक्तिगत रूप से एवं मसीही समुदायों के रूप में, जो संसार में फैले हुए

हैं, उनको छुटकारे की वास्तविकता का प्रदर्शन करना आवश्यक है। हमें व्यक्तिगत रूप से तथा सामूहिक रूप से प्रभु के द्वारा छुड़ाये गये लोगों की भाँति जीवन बिताना आवश्यक है।

मनन के लिए प्रश्नः

1. क्या छुटकारा वर्तमान समय की वास्तविकता है अथवा वह कुछ ऐसी वस्तु है जिसकी हम प्रतीक्षा कर रहे है?
2. यीशु के लहू की सामर्थ पर उस परिपेक्ष में चर्चा कीजिए कि वह लहू हमारे छुटकारे की कीमत चुकाने हेतु बहाया गया।
3. एक विश्वासी के जीवन पर शैतान का कितना अधिकार और स्वामित्व है? क्या एक विश्वासी के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शैतान के नियन्त्रण से छुटकारा मिला है?

3

हमारे छुटकारे के लाभ

छुटकारे के विषय पर अध्ययन जारी रखते हुए हम विभिन्न आत्मिक लाभों को बाइबल के भागों में से प्रकट करेंगे। यह सब एक सन्देश में समायोजित हैं। आप समय निकाल कर एकांत में इन पर मनन करेंगे और पवित्रात्मा को अनुमति देंगे कि वह आपको बताये कि यह बाइबल के सत्य आपके जीवन में कैसे लागू होते हैं।

बन्धुओं को छुटकारा

"प्रभु का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है। उसने मुझे भेजा है कि मैं बन्दियों को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सन्देश दूँ, और दलितों को छुड़ाऊँ और प्रभु के अनुग्रह के समय की उद्घोषणा करूँ" (लूका 4:18-19)।

"इस प्रकार तुम पचासवें वर्ष को पवित्र मानना और देश के समस्त निवासियों के छुटकारे की घोषणा करना। यह वर्ष तुम्हारे लिए जुबली कहलाएगा। इसमें तुम में से प्रत्येक व्यक्ति अपनी निज भूमि और निज परिवार में लौटे। इस जुबली के वर्ष में तुम अपनी-अपनी निज भूमि को लौट जाना"(लैव्यवस्था 25:10,13)।

इस पृथ्वी पर अपनी सेवा के आरम्भ में प्रभु यीशु ने कहा कि वह 'बन्धुओं को छुटकारे का सन्देश देने' और 'दबे हुए को छुड़ाने' आया। इस पर विचार करते हुए हम यह समझते हैं कि जो 'स्वतन्त्रता' और 'छुटकारा' वह हमें देने आया वह सामाजिक, राजनैतिक या सांस्कृतिक स्वतन्त्रता नहीं थी। परन्तु वह आत्मिक स्वतन्त्रता थी। शैतान का अदृश्य राज्य जो उसकी सेनाओं के द्वारा बनाया गया है, उसके द्वारा लोग हर

जगह आज भी आत्मिक रूप से बन्दी एवं कुचले हुए हैं। आत्मिक स्वतन्त्रता और छुटकारा जो यीशु हमें देता है उसे हम छुटकारा कहते हैं। छुटकारा यीशु मसीह की क्रूस पर मृत्यु और उसके विजयी पुनरूत्थान के द्वारा सम्भव हुआ है। यीशु मसीह में व्यक्तिगत विश्वास के द्वारा, जो उसने दिया है, उसके द्वारा एक व्यक्ति यह "स्वतन्त्रता" और "छुटकारा" अपने जीवन में अनुभव कर सकता है। यह छुटकारा प्राथमिक रूप से आत्मिक छुटकारा है। यह छुटकारा आत्मा में आरम्भ होता है और मानव अस्तित्व के समस्त क्षेत्रों को प्रभावित करता है जिसमें सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक क्षेत्र भी शमिल हैं।

बाइबल के विद्यार्थी हमें बताते हैं कि लूका 4:18-19 में यीशु के कहे गये वाक्य पुराने नियम के उत्सव के वर्ष मनाये जाने के सन्दर्भ में प्रकट किये गये हैं। परमेश्वर ने पुरानी वाचा के एक भाग में इस्राएलियों को पचास वर्ष के महोत्सव को सम्पन्न करने की आज्ञा दी। यह वह वर्ष था जिसमें समस्त दासों को स्वतन्त्रता दी गई ताकि वह अपने-अपने घर जा सकें। ऋण क्षमा कर दिया गया और भूमि थी उनको वापस कर दी गई। इस विचार के साथ-साथ चलते हुए, हम समझते हैं कि जो छुटकारा यीशु मसीह ने दिया उसके परिणास्वरूप हमारे आत्मिक ऋण क्षमा किये जाते हैं- हमारे पाप क्षमा किये जाते हैं। मानव अपने वास्तविक आत्मिक स्थिति में पहुँच जाता है, इसके साथ छुटकारे के और भी बहुत से उपकार हमारे जीवन में प्रकट होते हैं।

अन्दर प्रवेश कराने के लिए बाहर लाये गये

"परन्तु यहोवा ने तुम को चुना और मानो लोहे की भटी अर्थात मिस्त्र से निकाल लाया है कि तुम उसकी निज प्रजा बनो जैसा कि आज प्रकट है" (व्यवस्थाविवरण 4:20)।

"हम तो मिस्त्र में फिरौन के दास थे, और यहोवा ने हमें मिस्त्र से अपने भुजबल के द्वारा निकाला। फिर यहोवा ने मिस्त्र, फिरौन तथा उसके सम्पूर्ण घराने के विरुद्ध बड़े-बड़े तथा भयंकर चिन्ह और चमत्कार हमारी आँखें

के सामने दिखाये; और वह हमें वहाँ से निकाल लाया कि हमें उस देश में प्रवेश करा कर उसे हमें दे जिसकी शपथ उसने हमारे पूर्वजों से खाई थी" (व्यवस्थाविवरण 6:21-23)।

हम पिछले अध्याय में बता चुके हैं कि जो कुछ इस्राएलियों के साथ पुराने नियम में हुआ वही आत्मिक सत्य नये नियम की कलीसिया में प्रकट हुआ। परमेश्वर मिस्र की दासता से अपने लोगों को बाहर लाता है। यह शैतान की आत्मिक दासता से छुटकारे को प्रकट करता है। परमेश्वर इस्राएलियों को दासता से बाहर लाता है ताकि "उनको अपनी निज प्रजा बना सके"। वह उनको वहाँ से निकाल कर लाया ताकि उनको प्रतिज्ञा किये हुए देश में ला सके। इसलिए हमारा छुटकारा बाहर लाने और अन्दर प्रवेश कराने से सम्बन्धित है।

- परमेश्वर हमें अपने से अलग होने की स्थिति से निकाल कर अपने पास लाया ताकि हम उसके पुत्र और पुत्रियां बन जायें।
- परमेश्वर हमें शैतान की दासता से निकाल कर स्वतन्त्र कराकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में लाया।
- हमें पाप से निकाल कर धार्मिकता में लाया।
- वह हमें विनाश से निकालकर धार्मिकता में लाया।
- वह हमें पापी होने की दशा से निकाल कर लाया ताकि हम उसके याजक बन जायें।
- वह हमें दासत्व से निकालकर जीवन में राज्य करने के लिए लाया।
- वह हमें रोग से निकालकर स्वास्थ्य में लाया। वह हमें अत्याचार से निकालकर परमेश्वर प्रदत अधिकार में लाया।
- वह हमें पराजय से निकाल कर विजय में लाया।
- वह हमें असफलता से निकाल कर सफलता में लाया।

- वह हमें निर्धनता और आभाव से निकाल कर अनन्त आशा में लाया।
- वह हमें अनन्त मृत्यु से निकाल कर अनन्त जीवन में लाया है।

हम छुड़ाए गए हैं....

पाप की सामर्थ से छुड़ाए गए

“और उस धन्य आशा की, अर्थात् अपने महान् परमेश्वर यीशु मसीह उद्धारकर्त्ता की महिमा के प्रकट होने की प्रतीक्षा करते हैं। उसने अपने आपको हमारे लिए दे दिया कि हमें हर प्रकार के अधर्मा से छुड़ा ले और हमें शुद्ध करके अपने लिए एक ऐसी निज प्रजा बना ले, जो भले कार्य करने के लिए सरगर्म हो” (तीतुस 2:13,14)।

“तब पाप तुम पर प्रभुता करने नहीं पाएगा क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं, परन्तु अनुग्रह के अधीन हो” (रोमियों 6:14)।

यीशु “हम सब प्रकार की दुष्टता और समस्त अनुचित कार्यो से छुटकारा देने आया” जैसा कि बाइबल के दूसरे अनुवाद बताते हैं। यूनानी शब्द 'lutro' छुटकारे के लिए प्रयोग किया गया है। इसका अध्ययन हम इससे पहले अध्याय में कर चुके हैं। यह शब्द बन्धुओं को दाम चुकाकर छुड़ाए जाने के संदर्भ में प्रयोग किया गया है। अतः जो सत्य प्रकट किया गया है वह यह है कि यीशु हमें पाप के कार्यो, जो हमें दास बनाते हैं, उनसे छुटकारा देता है। व्यक्तिगत रूप से हम पहले अथवा इस समय भी विभिन्न प्रकार के पाप की आदतों के दास हो सकते हैं। यहाँ हमें उन आदतों की सूची प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है। हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने पापमय आदतों की पहचान सकते है। अब जब कि हम यीशु में हैं, हमें यह जानने की आवश्यकता है कि जो छुटकारा यीशु ने हमें दिया है, उसके द्वारा हम पापमय कामों की दासता से स्वतन्त्र हो सकते हैं। संसार इन पापमय कामों के विषय में यह तर्क कर सकता है कि यह हमारे पूर्वजों की देन है अथवा इस प्रकार के अन्य

तर्क प्रस्तुत कर सकता है। परन्तु हमें पाप को पाप की तरह मानना है और यह भी पहचानना है कि यीशु मसीह में हम स्वतन्त्र हो सकते हैं। हमें परमेश्वर के निज लोगों की तरह जीवन बिताना है जो उसके साथ धार्मिकता में चलने के लिए उत्सुक हैं।

शैतान के कार्यों से छुड़ाए गये

"उसने तो हमें अन्धकार के साम्राज्य से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया है" (कुलुस्सियों 1:13ए)।

"मैं तुमसे अब और अधिक बातें न कहूँगा क्योंकि इस संसार का शासक आ रहा है, और उसका मुझ पर कोई अधिकार नहीं। (मेरा उसके साथ कोई सरोकार नहीं है, मुझमें उसका कुछ भी नहीं, और मुझ पर उसकी कोई सामर्थ प्रबल नहीं होती)" (यूहन्ना 14:30)।

"हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है वह पाप नहीं करता; परन्तु वह जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है परमेश्वर उसकी रक्षा करता है और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता" (1 यूहन्ना 5:18)।

"देखो, मैंने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को कुचलने तथा शत्रु की सारी सामर्थ पर अधिकार दिया है, अतः तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचाएगा" (लूका 10:19)।

हमारे जीवन के ऊपर से हमें शैतान के नियंत्रण से छुड़ाया गया है। यूहन्ना 14:30 में जो कुछ यीशु ने कहा है, वह हमारे लिए भी कहा जा सकता है जो उसके द्वारा छुड़ाये गये हैं। इस संसार के राजकुमार, शैतान का हमारे जीवन पर कोई दावा नहीं है। उसका हमारे साथ कोई सरोकार नहीं है। हमारे पास उसका कुछ भी नहीं है। उसकी सामर्थ हमारे ऊपर प्रबल नहीं हो सकती। हम परमेश्वर के हैं जिसने हमें अपना निज भाग ठहराया है। हल्लेलूय्याह!! यीशु जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ हमें सुरक्षित रखता है और शैतान हमारी हानि नहीं कर सकता। हम न केवल शैतान

के चंगुल से छुड़ाये गये बल्कि हमें उसके ऊपर अधिकार भी दिया गया है और उससे पूर्ण सुरक्षा दी गई है! कितना महिमामय छुटकारा! अब जब शैतान हमारे विरोध में अपनी दुष्ट योजनाओं को पूरा करने का प्रयास करता है, चाहे हमें प्राणघाती बीमारी, हमारे परिवार व बच्चों को अलग-थलग करना, हमारे व्यापार में रुकावट डालना, आर्थिक कठिनाइयों को लाना अथवा विभिन्न प्रकार के विनाश को लाने के द्वारा हम पर आक्रमण करे तो हम उसके विरोध में खड़े होकर साहस से उसके कामों को झिड़क सकते हैं। हमें उसके हाथों में पीड़ा उठाने की आवश्यकता नहीं है।

इस वर्तमान दुष्ट युग से छुड़ाए गए

"हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह और शान्ति मिले, जिसने हमारे पापों के लिए अपने आपको दे दिया कि हमारे परमेश्वर और पिता की इच्छानुसार हमें इस वर्तमान बुरे युग से छुड़ा ले" (गलातियों 1:3-4)।

" जो कोई यह विश्वास करता है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है; और जो पिता से प्रेम करता है वह उससे भी प्रेम करता है जो उससे उत्पन्न हुआ है। क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है वह संसार पर जय प्राप्त करता है अर्थात्- हमारा विश्वास" (1 यूहन्ना 5:1ए, 4)।

यह पिता की इच्छा थी कि आपका और मेरा 'इस वर्तमान दुष्ट युग' से छुटकारा हो। यीशु ने इसे क्रूस पर छुटकारे के कार्य के द्वारा सम्भव बना दिया। हम वर्तमान दुष्ट युग से स्वतन्त्र किये गये हैं। यह युग (यूनानी शब्द 'aion' जिसका अर्थ 'एक निश्चित समय के दौरान' है) इस वर्तमान युग की ओर संकेत करता है जब शैतान 'इस युग का परमेश्वर' होकर इस संसार में कार्य कर रहा है (2 कुरिन्थियों 4:4)। 'बचाना' शब्द जिसका अनुवाद किया गया है वह यूनानी शब्द 'exaireo'

से निकला है जिसका अर्थ Vine's Dictionary के अनुसार–"अपने लिए बचाना" है। इस दुष्ट युग से हमें बचाने में पिता ने विशेष रुचि ली। यह उसके लिए महान् आनन्द की बात थी कि हम उसके लिए इस वर्तमान दुष्ट युग से बचाएं जाएं। हम इस वर्तमान दुष्ट युग से बचाए गए लोग हैं। अतः अब हमें इस वर्तमान युग के ईश्वर के कार्य और प्रभाव के अधीन रहने की आवश्यकता नहीं है। एक कदम आगे बढ़ते हुए परमेश्वर का वचन हमें बताता है कि प्रत्येक विश्वासी संसार पर विजय प्राप्त करता है। संसार (यूनानी शब्द 'kosmos') का अर्थ 'क्रम' और 'पद्धति' को आज हम अपने चारों ओर पाते हैं। यह पद्धति शैतान, दुष्टता और उपद्रव से व्याप्त समाज, संस्कृति और राष्ट्र को प्रकट करती है। यह पद्धति लोगों और परिस्थितियों को परमेश्वर के उद्देश्यों के विरोध में खड़ा करती है। एक विश्वासी को इस दुष्ट और उपद्रवी पद्धति के आधीन रहने की आवश्यकता नहीं है जो उसके चारों ओर के संसार को प्रभावित करती है। परमेश्वर का वचन हमें सिखाता है" ...जिससे कि तुम उनके द्वारा उस भ्रष्ट आचरण से वासना के कारण जो इस संसार में है, छोड़कर ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी हो जाओ" (2 पतरस 1:4)। एक विश्वासी शैतान ने स्वतन्त्र है जो इस वर्तमान युग पर राज्य करता है। वह इस दुष्ट और उपद्रवी संसार में विजय के साथ चल सकता है। यह यीशु मसीह के छुटकारे के कार्य के द्वारा सम्भव हो गया है।

पूर्वजों से चले आ रहे निकम्मे चाल-चलन से, जो विरासत में हमें मिला, छुड़ाए गए

"क्योंकि तुम जानते हो कि उस निकम्मे चाल-चलन से जो तुम्हें अपने पूर्वजों से प्राप्त हुआ, तुम्हारा छुटकारा सोने या चाँदी जैसी नाशवान् वस्तुओं से नहीं, परन्तु निर्दोष और निष्कलंक मेमने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ है" (1 पतरस 1:18-19)।

पतरस की दोनों पत्रियां उन मसीहियों को लिखी गई थीं जो एशिया माइनर के विभिन्न भागों में रहते थे। ये मसीही विश्वासी अधिकांशतः

अन्य जातियों (गैर–यहूदी लोग) में से थे। उनके पुराने जीवन की विशेषताएं इस प्रकार प्रकट की गई, “कामुकता में जीवन बिताना, पियक्कड़पन, मद्यपान, गोष्ठियों, घृणित मूर्तिपूजा आदि” (1 पतरस 4:3)। इन लोगों को पतरस यह घोषणा करता है कि वे “पुरखाओं से चले आ रहे निकम्मे चाल–चलन जो विरासत में हमें मिला है, से छुटकारा प्राप्त हुआ है।” यह एक सत्य है कि जिसे संसार के सभी लोग बिना जाति और संस्कृति के भेदभाव के अपना सकते हैं। व्यक्तिगत रूप से हम अपने आप को इस प्रकार के कार्य में लगा हुआ पा सकते हैं जो शायद हमें अपने माता–पिता शराब पीते हैं, वह अपने बच्चों को यह आदत विरासत में देते हैं, अथवा कोई विशेष धार्मिक आराधना का तरीका हो सकता है जो पीढ़ियों से चला आया है। विश्वासी होने के कारण हमें यह जानना आवश्यक है कि यीशु मसीह के रक्त ने हमें ऐसे पाप और जीवन –पद्धतियों से छुटकारा दिलाया है। यह कितने आश्चर्य की बात है कि लोग निक्कमे चाल–चलन से, जो उन्हें अपने पूर्वजों से मिला था, यीशु मसीह के खून से छुटकारे की सामर्थ के द्वारा स्वतन्त्र हो जाते हैं। यह वास्तव में एक और आश्र्चयजनक बात है कि एक व्यक्ति जो मूर्ति–पूजक घर में जन्मा, सत्य और जीवित परमेश्वर की आराधना करने के लिए स्वतन्त्र किया गया है। यह एक सचमुच आश्र्चयजनक बात है कि एक व्यक्ति जिसका परिवार लम्बे समय से व्यभिचार एवं कामुकता जैसे घृणित कार्यों में लिप्त था, इन बातों से स्वतन्त्र किया गया है। परमेश्वर की आराधना और उसकी सेवा सदैव उसके पुत्र और पुत्रियों की तरह कर सकते हैं।

हम छुड़ाए गए हैं ....

उच्चतम राज्य हेतु छुड़ाए गए

“उसने तो हमें अन्धकार के साम्राज्य से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया है” (कुलुस्सियों 1:13)।

हम परमेश्वर के पुत्र के राज्य में लाये गये हैं। यह एक उच्चतम राज्य है। एक ऐसा राज्य जो अन्य सभी राज्यों पर राज्य करता है। हमें इसी राज्य के सिद्धान्त और कानूनों के अनुसार जीवन बिताना है। यीशु मसीह के राज्य के नियम, संसार के राज्यों और प्रकृति के नियमों से बढ़कर हैं। हम इसी राज्य के लोग हैं। यह राज्य धार्मिकता, शान्ति, आनन्द, आशीष, सामर्थ और विजय का राज्य है। हम उन हितों और सौभाग्यों (प्राथमिकताओं) का लाभ उठा सकते हैं, जो परमेश्वर के पुत्र के राज्य के लोगों को प्राप्त हैं। उच्चतम राज्य के नियमों को कार्यरत करने के द्वारा हम अलौकिकता में चल सकते हैं– स्वभाविकता से ऊपर चल सकते हैं!

परमेश्वर के साथ धार्मिक होने के लिए छुड़ाए गए

"इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है। वे उसके अनुग्रह ही से छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंतमेंत धर्मी ठहराए जाते हैं" (रोमियों 3:23–24)।

यीशु मसीह के द्वारा दिया गया छुटकारा हमें धार्मिकता की ओर ले जाता है। धर्मी ठहराए जाने का अर्थ है कि हम सारे दोषों से मुक्त घोषित किये गए हैं। हम ऐसे धार्मिक बनाये गये कि मानो हमने कभी पाप ही न किया हो। हम परमेश्वर के समक्ष "निर्दोष" खड़े हुए हैं। अतः हम सर्वशाक्तिमान परमेश्वर से निर्दोष अथवा हीनता की भावना न रखते हुए सम्बन्ध रख सकते हैं। हम विरोधी शैतान और पाप के दोषारोपण का सामना इस सत्य के द्वारा कर सकते हैं कि "हम उसके अनुग्रह से यीशु के छुटकारे के द्वारा धर्मी ठहराये गये।"

परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियां होने के लिए छुड़ाये गये

"परन्तु जब समय पूरा हुआ तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से उत्पन्न हुआ कि जो लोग व्यवस्था के अधीन हैं उन्हें मूल्य चुकाकर छुड़ा ले और हम को लेपालक पुत्र होने का अधिकार प्राप्त हो" (गलातियों 4:4–5)।

छुटकारा हमें उस स्थान तक पहुँचाता है जहाँ हमें सर्वशाक्तिमान परमेश्वर की सन्तान होने का सौभाग्य (प्राथमिकता) मिलता है। इस सौभाग्य (प्राथमिकता) का आनन्द हम उठा सकते हैं। परमेश्वर विशेष रूप से अपने लोगों की चिन्ता करता है। हम जो मसीह में विश्वास करते हैं वे ही विशेष लोग हैं।

राजा और याजक होने के लिए छुड़ाये गये

"और उन्होंने यह नया गीत गया: "तू इस पुस्तक के लेने और उसकी मुहरें खोलने के योग्य है, क्योंकि तू ने वध होकर अपने लहू से प्रत्येक कुल, भाषा, लोग और जाति से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है। और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिए एक राज्य और याजक बनाया और वे पृथ्वी पर राज्य करेंगे।"

"जब एक ही मनुष्य के अपराध के कारण, मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा शासन किया, इससे बढ़कर वे जो अनुग्रह और धार्मिकता के दान को प्रचुरता से पाते हैं, उस एक ही यीशु मसीह के द्वारा जीवन में राज्य करेंगे।

हम परमेश्वर के राज्य में राजा और याजक होने के लिए छुड़ाये गये है। सर्वोच्च परमेश्वर के राजा होने के नाते हमारी वर्तमान और भविष्य की सेवाएं नियुक्त हैं। आज हम पृथ्वी पर परमेश्वर की सेवा करते हैं। हम मसीह में अन्य भाइयों के स्थान पर सेवा करते है। आज हम अपने व्यक्तिगत जीवनों में विषम परिस्थितियों के ऊपर परमेश्वर द्वारा दिये गये अधिकार का प्रयोग करके अपने "जीवन में राज्य" कर सकते हैं।

आशीष की वाचा हेतु छुड़ाये गये

"यह इसलिए हुआ कि इब्राहीम की आशीष मसीह यीशु में गैरयहूदियों तक पहुँचे और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें जिसकी प्रतिज्ञा की गई है" (गलातियों 3:14)

छुटकारा जो मसीह देता है वह हमें आशीष की वाचा में प्रवेश कराता है। यह वे आशीषें हैं जिन्हें परमेश्वर ने इब्राहीम को देने की प्रतिज्ञा की थी, वे आशीषें दोनों प्रकार की आशीषें दी थीं। वह विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया गया, परमेश्वर का मित्र कहलाया, अपने प्रार्थना के उत्तरों की आशीषों को प्राप्त किया और परमेश्वर ने उसे अन्य वस्तुओं के साथ भौतिक रुप से सम्पन्न किया। परमेश्वर के सम्बन्ध की वाचा तथा इसके साथ आने वाली आशीषें हमारी हैं क्योंकि यीशु मसीह के छुटकारे के द्वार यह सम्भव हो गया है।

हमारे छुटकारे का शिखर बिन्दु

"उसी ने तुम पर भी, जब तुमने सत्य का वचन सुना जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है- और जिस पर तुमने विश्वास किया-प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी। वह हमारे उत्तराधिकार के बचाने के रूप में इस उद्देश्य से दिया गया है कि परमेश्वर के मोल लिए हुओं का छुटकारा हो जिससे परमेश्वर की महिमा की स्तुति हो" (इफिसियों 1:13-14)।

"परमेश्वर के पवित्रात्मा को शोकित मत करो, जिससे तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है" (इफिसियों 4:30)।

"क्योंकि हम जानते हैं कि सम्पूर्ण सृष्टि मिलकर प्रसव पीड़ा से अभी तक कराहती और तड़पती है और न केवल यह परन्तु स्वयं हम भी जिनके पास आत्मा का प्रथम फल है, अपने आप में कराहते हैं, औ अपने लेपालक पुत्र होने और देह के छुटकारे की बड़ी उत्कण्ठा से प्रतीक्षा कर रहे हैं" (रोमियों 8:22,23)।

छुटकारे का एक भाग और भी है जिसका हमें आनन्द उठाना अभी बाकी है। ऐसा पूर्ण छुटकारे के दिन होगा जब हमारी देह बदल जायेगी और अमरता को पहन लेगी। हम पृथ्वी पर अस्थिरता पर इस जीवन से निकल कर आत्मिकता में बदल जायेंगे।

मनन हेतु प्रश्नः

1. उन बातों की सूची पर विचार करें "जिनसे हम छुड़ाए गए" हैं और चर्चा करें कि ये हमारे प्रतिदिन के जीवन में कैसे लागू होते हैं।

2. उन वस्तुओं की सूची पर विचार करें "जिनके लिए हम छुड़ाए गए" हैं और चर्चा करें कि ये बातें हमारे प्रतिदिन के जीवन में क्या मूल्य रखती है।।

4

छुटकारे के लाभों को अपनाना

जिस संसार की रचना परमेश्वर ने की है वह क्रमों और उद्देश्यों का संसार है। जो कुछ परमेश्वर ने रचा है वह नियमों (अथवा सिद्धान्तों) के अधीन है। इन्हीं नियमों का अस्तित्व परमेश्वर की रचना को ठीक रीति से चलाता है। विद्युत के नियम, कृषि के नियम, गुरुत्वाकर्षण का नियम आदि होते हैं। हमारा प्राकृतिक जीवन इस पृथ्वी पर परमेश्वर के द्वारा बनाये गये नियमों का मात्र प्रयोग करता है। हम केवल एक ही सिद्धान्त के द्वारा नहीं जीते। बल्कि हमारा प्राकृतिक अस्तित्व इन बहुत से सिद्धान्तों से सम्भव है जैसे हम इन "प्रकृति के नियमों" का लाभ उठाते हैं।

अदृश्य संसार–आत्मिक संसार में कोई विशेष अन्तर नहीं पाया जाता। बल्कि किसी विशेष सीमा तक इन दोनों संसारों में समानता पाई जाती है। प्राकृतिक संसार आत्मिक संसार को प्रकट करता है (रोमियों 1:20)। अतः हमें यह मालूम होना चाहिए कि सामान्यतः आत्मिक संसार विशेषकर परमेश्वर का राज्य आत्मिक नियमों (अथवा सिद्धान्तों) के द्वारा चलाया जाता है। जैसे प्राकृतिक संसार नियमों पर आधारित है, ठीक उसी प्रकार आत्मिक संसार भी आत्मिक नियमों पर आधारित है जो परमेश्वर ने स्थापित किए हैं।

हमें मसीह में आत्मिक संसार की सभी आशीषें प्रदान की गई हैं (इफिसियों 1:3)। इन में से एक अद्भुत आशीष छुटकारे की आशीष है। हम प्रभु के द्वारा छुड़ाये गये लोग हैं। छुटकारा वह आशीष है जो हमें आत्मिक संसार में प्राप्त है। (उदाहरण के लिए, हम यह कह सकते हैं कि यह एक ऐसी आशीष है जो हमारे आत्मिक बैंक खाते में जमा किया गया धन है और हमें स्वतन्त्र रूप से अधिकार दिया गया है कि हम

जितना चाहे निकाल सकते हैं... यह हमारे प्रयोग के लिए है।) पिछले अध्ययन में हमने इस विषय पर अध्ययन किया है और समझा है कि छुटकारा और इसकी आशीषें हमारे लिए कैसी अद्‌भुत हैं। हमारे सामने चुनौती यह है कि हम इस बात को समझें कि हम प्राकृतिक संसार में आत्मिक आशीषों को कैसे प्रकट करते हैं। हम उन आत्मिक आशीषों को जो परमेश्वर ने हमें इस पृथ्वी पर दी हैं कैसे अनुभव करते हैं?

हम ऐसे प्राणी है जो प्राकृतिक और आत्मिक संसार दोनों में कार्य करने के योग्य हैं। अतः हम आत्मिक बातों को प्राकृतिक संसार में प्रकट और अनुभव कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, अलौकिक चंगाई और स्वास्थ्य आत्मिक आशीषें है। ये आशीषें परमेश्वर की ओर से आती हैं। हम इस आत्मिक आशीष को लेकर चंगाई और स्वास्थ्य अपने शरीर में अनुभव कर सकते हैं। यद्यपि कुछ नियम (अथवा सिद्धान्त) परमेश्वर ने बनाये हैं जो इस प्रक्रिया को नियन्त्रित करता है, जिनके द्वारा आत्मिक आशीष्ज्ञ प्राकृतिक संसार में प्रकट की जाती है ताकि हम उनका आनन्द प्रकट रूप से उठा सकें। इस बाइबल अध्ययन के द्वारा हमारा उद्देश्य यह है कि हम उनमें से कुछ सिद्धान्तों का अवलोकन करें।

प्रकाशन के ज्ञान का विषय

"तब यीशु उन यहूदियों से जिन्होंने उस पर विश्वास किया था, कहने लगा, यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे, और तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतन्त्र करेगा" (यूहन्ना 8:31,32)।

सैद्धान्तिक रूप से आत्मिक सत्य को पहले जानना आवश्यक है उससे पहले कि हम इसका अनुभव करें। (यद्यपि कुछ विकल्प हो सकते हैं)। आज संसार में कलीसियाओं की बड़ी समस्या यह है कि लोगों के समक्ष सत्य प्रकट नहीं किया जाता। बहुत से प्रचारक अपने वर्ग (डिनोमिनेशन) का प्रचार करते हैं। कई बार हम इतने बुद्धिजीवी बन जाते हैं और सत्य को एक तरफ रखकर तर्क-संगत और उचित बातों को प्रकट करते हैं। चाहे यह पूर्ण अज्ञानता हो अथवा पथ-भ्रष्टक बुद्धिजीविता

हो, यदि यह लोगों को सत्य को जानने में रुकावट डालती है तो निश्चय ही यह लोगों को वे सब आशीषों को अनुभव करने से रोकेगी जो परमेश्वर ने उन्हें दी हैं। मसीही होने के नाते, हमारी यह इच्छा होनी चाहिए कि हम सत्य को जानें क्योंकि सत्य को जानना ही परमेश्वर की आशीषों को अनुभव करने का पहला कदम होता है।

ज्ञान का आभाव

"अज्ञानता के कारण मेरी प्रजा नाश होती जाती है" (होशे 4:6)।

अज्ञानता हमें आत्मिक आशीषें, जो हमारी हैं, अनुभव करने से रोकती है।। वास्तव में हमें यह भी नहीं मालूम होता कि हम कितनी आशीषें खो रहे है! यदि हम छुटकारे के सत्य को नहीं जानते तो शैतान हमारी अज्ञानता का लाभ उठाकर हमें बन्दी बना लेता है। हमें यह भी नहीं मालूम होगा कि हम स्वतन्त्र किये जा सकते हैं। इसीलिए हमें सत्य को जानने की आवश्यकता है।

प्रकाशन का आभाव

"मैं तुम्हारे लिये लगातार धन्यवाद देता हूँ कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर, जो महिमा का पिता है, तुम्हें अपनी पूर्ण पहचान में ज्ञान और प्रकाशन का आत्मा दे, मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारे मन की आँखें ज्योर्तिमय हों, जिससे तुम जान सको कि उसकी बुलाहट की आशा क्या है, और पवित्र लोगों में उसके उत्तराधिकार की महिमा का धन क्या है, और उसका सामर्थ हम विश्वास करनेवालों के प्रति कितना महान् है, उसकी शाक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार" (इफिसियों 1:17-19)।

आत्मिक ज्ञान आत्मिक जागरूकता से आता है। यह मधुर पवित्र आत्मा ही है जो बुद्धि और प्रकाशन का आत्मा है। वह हमें आत्मिक सत्य को समझने के लिए जागरूक करता है। प्राकृतिक मस्तिष्क और इसकी तर्क-वितर्क, सोचनीय योग्यता पवित्र आत्मा के द्वारा ही प्रकाशित होना आवश्यक है। पवित्र आत्मा ही अपनी बुद्धि और प्रकाशन (प्रकाशन

> सत्य का खुलासा) हमारे हृदय (आत्मा) में डालता है। यह बुद्धि और प्रकाशन हमारे हृदय और आत्मा से निकल कर बुद्धि और मस्तिष्क का मार्गदर्शन करती है। तब हमारे हृदय की आँखें प्रकाशित हो जाती हैं और हम समझ लगते हैं कि परमेश्वर ने हमारे लिए क्या-क्या सुरक्षित रखा है।

समस्या तब खड़ी होती है जब हम प्राकृतिक बुद्धि की योग्यता को आत्मिक सत्य समझने के लिए प्रयोग करते हैं जो पवित्र-आत्मा के प्रकाशन के बिना होता है। हम प्रायः उस ज्ञान को प्राप्त करते हैं, जो हमें सत्य के मार्ग से हटा देती है। ऐसा ज्ञान यद्यपि प्राकृतिक मस्तिष्क के लिए संतोषजनक होता है। लेकिन लोगों को स्वतन्त्र नहीं करेगा। परमेश्वर की अद्धभुत सामर्थ्य को अनुभव करने में ऐसा ज्ञान सहायक नहीं होता।

मनुष्य की परम्पराएं

"परमेश्वर की आशा को टाल कर तुम मनुष्यों की परम्परा का पालन करते हो। उसने उनसे यह भी कहा,"तुम अपनी परम्परा का पालन करने के लिए परमेश्वर का आज्ञा को कैसी अच्छी तरह टाल देते हो। इस प्रकार तुम परमेश्वर के वचन को अपनी परम्परा के द्वारा जो तुमने ठहराई है अमान्य करते हो और तुम बहुत से ऐसे ही काम करते हो" (मरकुस 7:8,9,13)।

"सावधान रहो कि कोई तुम्हें उस तत्वज्ञान और व्यर्थ की बातों के द्वारा भम्र में न डाले जो मनुष्यों की परम्परा और जगत की प्रारम्भिक शिक्षा के अनुसार तो है, पर मसीह के अनुसा नहीं" (कुलुस्सियों 2:8)।

परम्पराऐं अपने आप में बुरी नहीं हैं। अच्छे रीति-रिवाज भी हैं जैसे शिक्षा एवं अभ्यास जो हमें पूर्वजों से प्राप्त हैं-जिनको हमें मानना चाहिए। प्रेरित पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को बताया, "दृढ़ रहो तथा उन शिक्षाओं (परम्पराओं) में स्थिर रहो जिनकी शिक्षा तुमने हमसे मौखिक या पत्रों के द्वारा प्राप्त की है" (2 थिस्सुलनीकियों 2:15)। वह आगे भी उनको लिखता है "ऐसे भाई से दूर रहो जो शिक्षा (परम्परा) पर नहीं चलता जो

तुमने हमसे पायीं है" (2 थिस्सलुनीकियों 3:6)। तौभी हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम व्यक्तिगत रूप से प्रकाशन अथवा उसकी समझ प्राप्त करें कि क्या हमें इन परम्पराओं को जीवित रखना चाहिए अथवा इन्हें दूसरों को सिखाना चाहिए। यह हमारे जीवन को परमेश्वर की सामर्थ्य और भक्तिपूर्ण परम्पराओं को बरकरार रखेंगे।

दूसरी ओर बहुत-सी शिक्षाएं और "परम्पराएं मनुष्य की बनायी हुई हैं", जो परमेश्वर के वचन की सामर्थ्य को अलग कर देती हैं। वे वर्गीय (डिनोमिनेशनल) शिक्षाएं, परम्पराएं, सांस्कृतिक तत्वज्ञान/ अभ्यास आदि हो सकते हैं, जिन्होंने कलीसिया में अपना अधिकार बना लिया है और परमेश्वर के लोगों को बन्दी बनाया है। अगुवों की यह जिम्मेदारी है कि वे सत्य वचन को प्रस्तुत करें ताकि अनर्थ परम्पराएं समाप्त हो सकें और लोग यीशु मसीह की सत्यता में चल सकें। मसीही होने के नाते हमें परम्पराओं से ऊपर उठकर सत्य का चुनाव करना चाहिए। चाहे यह परम्पराएं कितनी ही प्रिय क्यों न हों।

सत्य का चुनाव करना

पहला कदम छुटकारे के लाभों को अपने जीवन में सुरक्षित रखना और तब यीशु मसीह के सत्य को खोजना, जानना औ उसे स्वीकार करना आवश्यक है। यदि हमें छुटकारे के पूर्ण लाभों की सच्चाई नहीं मालूम तो हम उनका अनुभव नहीं कर पायेंगे। सत्य का ज्ञान पवित्र आत्मा के प्रकाशन के कार्य के द्वारा आता है। इसलिए हमें पवित्र आत्मा की सेवा अपने जीवन में खोजनी चाहिए। यदि हमारे वर्गीय (डिनोमिनेशनल) और सांस्कृतिक परम्पराऐं सत्य के वचन का विरोधाभास करतीं हैं तब हमें इन परम्पराऐं को छोड़ देना चाहिए और सत्य पर बने रहना चाहिए।

परमेश्वर की सहभागिता में चलना

"जो परम प्रधान की शरण में वास करता है, वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा" (भजनसंहिता 91:1)।

केवल तब ही परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं हमारे जीवन में पूरी होती हैं जब हम उसकी उपस्थिति में चलते हैं। महाप्रतापी परमेश्वर की शरण एक गुप्त स्थान है, जहाँ पर परमेश्वर स्वयं रहता है। यही वह स्थान है जहाँ परमेश्वर की उपस्थिति रहती है। यही वह स्थान है जहाँ परमेश्वर से सहभागिता रखी जा सकती है। वह व्यक्ति जो परमेश्वर की उपस्थिति में निवास करता है (लगातार बना रहता है) वह सर्वशक्तिमान की छाया में पूर्ण सुरक्षा पाएगा। परमेश्वर उसको अपने शरण स्थान में बनाए रखता है। ऐसा व्यक्ति उन आशीषों को अनुभव कर पाएगा जो भजनसंहिता 91 में लिखी हैं। यही लाभ हमारे छुटकारे में पाये जाते हैं। परमेश्वर की सहभागिता में चलना आवश्यक है यदि हम परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का अनुभव करना चाहते हैं और उसके द्वारा दिये गये छुटकारे का पूरा-पूरा लाभ उठाना चाहते हैं तो हमारे लिए आवश्यक है कि हम परमेश्वर की सहभागिता में चलें।

धार्मिकता में चलना

"जब जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है वह पाप नहीं करता, परन्तु वह जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, उसकी रक्षा करता है और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता" (1 यूहन्ना 5:18)।

"यहोवा ने कैन से कहा,"तू क्यों क्रोधित है और तेरा मुँह क्यों उतरा हुआ है? यदि तू भला करे तो क्या तू ग्रहण न किया जाएगा? पर यदि तू भला न करे तो पाप द्वार पर दुबका बैठा है और वह तेरी लालसा करता है, परन्तु तुझे उस पर प्रभुता करना है" (उत्पत्ति 4:6,7)।

भक्तिपूर्ण जीवन हमें परमेश्वर के क्षेत्र और उसकी "छाया" में रहने की योग्यता प्रदान करता है। हमारे जीवनों पर परमेश्वर की सुरक्षित छाया है। प्रभु यीशु मसीह हमें सुरक्षित रखता है और शैतान हमें हानि नहीं पहुँचा सकता। यदि हम पाप करते हैं और लगातार पाप में बने रहते हैं तब शैतान के कार्य प्रकट होते हैं। जो कुछ परमेश्वर ने कैन से कहा

उसमें पाप को एक "प्राणी" के रूप में दर्शाया गया है, जो हमारे जीवनों में प्रवेश करने के लिए द्वार उत्सुकता से खड़ा रहता है। तौभी परमेश्वर के द्वारा दी गयी योग्यता हमारे पास है कि हम इस द्वार को वह सब कुछ करने के द्वारा जो ठीक है, बन्द रख सकते हैं।

परमेश्वर में विश्वास का व्यवहार करना

"यदि तुम में से किसी को बुद्धि की कमी हो तो वह परमेश्वर से माँगे और उसे दी जाएगी। क्योंकि वह प्रत्येक को बिना उलाहना दिए उदारता से देता है। पर विश्वास से माँगे और तनिक भी संदेह न करे क्योंकि जो संदेह करता है वह समुद्र की लहर के समान है, जो हवा से उठती और उछलती है। ऐसा मनुष्य यह आशा न रखे कि उसे परमेश्वर से कुछ प्राप्त होगा" (याकूब 1:5-7)।

एक बार जब हमें छुटकारे के सत्य की जानकारी हो जाती है कि यह सत्य क्या है और इसकी आशीषें हमारे लिए हैं। जब हम परमेश्वर की सहभागिता और उसकी धार्मिकता में चलते हैं तब हमें परमेश्वर में अपने विश्वास को बढ़ाने की आवश्यकता है ताकि उसका वचन प्रकट रूप से वास्तविकता बन जाये। विश्वास के द्वारा ही हम परमेश्वर से पाते हैं। विश्वास के द्वारा ही हम आत्मिक संसार में वह सब कुछ पाते हैं जिसे हम प्राकृतिक संसार में देखते हैं। कुछ सिद्धान्त हैं, जिनके द्वारा विश्वास के कार्यों का नियन्त्रण होता है। विश्वास परमेश्वर के वचन से उत्पन्न होता है। अपने हृदय के विश्वास से हम अपने जीवन की सारी परिस्थितियों में अधिकार के साथ बोल सकते हैं कि वह परमेश्वर के वचन के अनुरूप बन जायें। आप अपने हृदय के विश्वास से बीमारी और रोग को आज्ञा दे सकते हैं कि वह निकल जाए। परमेश्वर की प्रतिज्ञा में विश्वास करते हुए कि वही जो हमें धन अर्जन करने के योग्य बनाता है (व्यवस्थाविवरण 8:18), आप सम्पन्नता को "पुकार" सकते हैं, और उचित नौकरी को प्राप्त कर सकते हैं और पैसा कमा सकते हैं।

अपने हृदय के विश्वास से आप अपने घर और परिवार में शान्ति और एकता ला सकते हैं। बल्कि यीशु ने यहाँ तक कहा है, "कि यदि तुम विश्वास करो तो कुछ भी तुम्हारे लिए असम्भव नहीं होगा (मत्ती 17:20)। दूसरी ओर, जैसा वचन कहता है, बिना विश्वास के परमेश्वर से कुछ भी प्राप्त करना असम्भव है। जो सत्य हमें सिखाया गया है, यदि हम उसका व्यवहार अपने जीवन में न करें तो सत्य को जानने के बावजूद भी हम उसका अनुभव नहीं कर पायेंगे।

शैतान को झिड़कना

"संयमी और सचेत रहो। तुम्हारा शत्रु शैतान गर्जनवाले सिंह की भाँति इस ताक में रहता है कि किसको फाड़ खाए। विश्वास में दृढ़ रहकर उसका विरोध करो, और यह जान लो कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं इसी प्रकार की यातना सह रहे हैं" (1 पतरस 5:8,9)

"शैतान को अवसर न दो" (इफिसियों 4:27)।

जब तक हम इस संसार में हैं तब तक सदैव हमें शैतान के प्रति सतर्क रहना होगा। शैतान परमश्वेर की आशीषों को चुराने का तथा हमें छुटकारे के लाभों से वंचित रखने का प्रयास करेगा, ताकि हम सदैव चिन्तित बन रहें, अन्य क्षेत्रों में नाश होने, बीमारियों के द्वारा हमारे शरीर को नाश करने, निर्धनता में डालने, परमेश्वर के कार्यों को करने से रोकने, पाप के द्वारा हमारे परिवारों को नाश करने अथवा हमारे विरोध में सताव भेजने का प्रयास करेगा आदि-आदि। शैतान इन क्षेत्रों में से कोई भी क्षेत्र चुने लेकिन हमें "विश्वास में दृढ़ होकर उसको झिड़कना" है। हमे अपने जीवन में शैतान को एक भी अवसर नहीं देना चाहिए। भयभीत होने के बजाये हमें परमेश्वर और उसके वचनों में स्थिर रहना चाहिए। लोगों के प्रति क्रोधित और कड़वे होने के बजाए हमें परमेश्वर के वचन का दावा करना चाहिए। हमें आत्मा की तलवार से, जो आपके मुख से बोला गया परमेश्वर का वचन है, शत्रु से युद्ध करना है।

यह एक ऐसा शत्रु है जहाँ बहुत से मसीही लोग गिर जाते हैं। जैसे ही शत्रु उनके विरोध में आता है, वैसे ही वे वहाँ से भाग जाते हैं। वे सोचते है कि छुटकारे की आशीषों में चलना संभव नहीं है। वे यह भी सोचते हैं कि शायद परमेश्वर नहीं चाहता कि वे आशीष पायें। इन सब बातों के बजाये हमें शत्रु को झिड़कना है और वस्तुओं का चुनाव करना है जिन्हें यीशु ने अपनी मृत्यु के द्वारा हमें दिया है।

आक्रमकता एवं धैर्य के साथ लाभों का अपनाना

"यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के दिनों से लेकर अब तक स्वर्ग के राज्य में बलपूर्वक प्रवेश होता रहा है, और प्रबल मनुष्य उस पर बलपूर्वक अधिकार कर लेते हैं" (मत्ती 11:12)।

"जिससे कि तुम आलसी न हो जाओ परन्तु उनका अनुकरण करो जो विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के उत्तराधिकारी हैं" (इब्रानियों 6:12)।

"इसलिए अपना भरोसा न छोड़ो, जिसका महान् प्रतिफल है। क्योंकि तुम्हें धैर्य की आवश्यकता है कि तुम परमेश्वर की इच्छा पूर्ण करके जिस बात की प्रतिज्ञा की गई थी उसे प्राप्त कर सको" (इब्रानियों 10:35, 36)।

परमेश्वर की आशीषें मुफ्त में दी गयी हैं। लेकिन फिर भी वह सस्ती नहीं हैं, और न ही वह आत्मिक रूप से आलसी लोगों के लिए हैं। उनको बहुत बड़ी कीमत-परमेश्वर के अपने ही पुत्र की कलवरी पर मृत्यु और उसका विजयी पुनरुत्थान देकर प्रदान किया गया है। इसलिए हमें आगे बढ़कर एवं धैर्य के साथ इन प्रतिज्ञाओं को प्राप्त करना चाहिए। इतना ही पर्याप्त नहीं है कि हम छुटकारे के सत्य को ढूँढ़ने और परमेश्वर के साथ पवित्र सहभागिता आरम्भ करें। लेकिन यह लगातार विश्वास का व्यवहार, जिसे हमने सत्य में पाकर स्वीकार किया है, बढ़ते चले जाएं और लगातार उसमें बने रहें-दिन-प्रतिदिन, वर्ष-प्रतिवर्ष उन

बातों में, जो शीघ्र बदलती हुई प्रतीत नहीं होतीं। शायद आप विशेष बीमारी से छुटकारा पाने का विश्वास कर रहे हों। लेकिन चंगाई एक या दो दिन में नहीं मिलती। लेकिन यह प्रयास समाप्त करने का समय नहीं है। यदि आपने एक बार परमेश्वर की इच्छा को पूरा किया है, तो लगातार धैर्य बनाये रखें। परमेश्वर ने जो कुछ प्रतिज्ञा की है उसे आप अवश्य प्राप्त करेंगे।

परमेश्वर प्रदत्त सिद्धान्तों को लागू करना

"तू केवल हियाव बाँध और अत्यधिक दृढ़ हो। मेरे दास मूसा ने जो व्यवस्था दी है, उसकी सब आज्ञाओं के अनुसार व्यवहार करने के लिए सावधान रह। उनसे न दाहिने मुड़ना न बाएं जिससे जहाँ-जहाँ भी तू जाए वहाँ-वहाँ सफलता प्राप्त करे" (यहोशू 1:7)।

परमेश्वर ने आत्मिक सिद्धान्त अपने वचन में प्रकट किये हैं। हमने उनमें से कुछ पर विचार किया है। अन्य सिद्धान्त भी हैं जो हमारे जीवनों के विशेष क्षेत्रों से जुड़े हुए हैं। उदाहरण के लिए दशमांश देने के विषय में (मलाकी 3:10-12), परमेश्वर के काम के लिए अपनी आय का दसवाँ भाग देना। यदि हमें परमेश्वर की आर्थिक आशीषों को अनुभव करना है तो हमें इस सिद्धान्त का पालन करना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त प्रेम करने और क्षमा करने और एक-दूसरे के अधीन रहने के सिद्धान्त भी हैं जो हमारे सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाते हैं। परमेश्वर के सिद्धान्त आपस में जुड़ हुए हैं। वे एक-दूसरे पर निर्भर हैं। हमें उनमें से प्रत्येक का पालन करना आवश्यक है। हमें उनसे न तो दायें मुड़ना है और न ही बाएं मुड़ना है। यदि हम उनका पालन करें, उनको अपने जीवन में लागू करें, तब हम परमेश्वर की आशीषों का अनुभव कर सकेंगे!

मनन हेतु प्रश्नः

1. वे कौन–सी बातें है जो एक विश्वासी को उसके छुटकारे के लाभों से वंचित रख सकती हैं?
2. छुटकारा वास्तविक है तौभी परमेश्वर के सिद्धान्तों का पालन करना आवश्यक है ताकि हम अपने छुटकारे की आशीषों को अनुभव कर सकें। इनमें से कुछ सिद्धान्तों पर विचार करें जो इस अध्याय में वर्णित हैं। इनका पालन न करने पर हमें अपने छुटकारे की आशीषों से यह कैसे वंचित रख सकते हैं।

ऑल पीपल्स चर्च के प्रतिभागी

स्थानीय कलीसिया के रूप में संपूर्ण भारत देश में, विशेषकर उत्तर भारत में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा ऑल पीपल्स चर्च अपनी सीमाओं के पार सेवा करता है; उसका मुख्य लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवा के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। संपूर्ण वर्षभर जवानों, और पासबानों तथा सेवकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पासबानों की महासभाओं का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा, वचन में और आत्मा में विश्वासियों की उन्नति करने के उद्देश्य से अंग्रेजी तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं में पुस्तकों की कई हज़ारों प्रतियां विनामूल्य वितरीत की जाती हैं।

जिन बातों की ओर परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहा है उसके लिए काफी पैसों की ज़रूरत होती है। हम आपको निमंत्रित करते हैं कि एक समय की भेंट या मासिक मदद भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ भागीदार बनें। देश भर में हमारे इस कार्य में हमारी सहायता करने हेतु आपके द्वारा भेजी गई कोई भी रकम सराहनीय होगी।

आप अपनी भेंट “ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर” के नाम से चेक / बैंक ड्राफ्ट के जरिए हमारे ऑफिस के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा आप अपना योगदान सीधे हमारे बैंक खाते की जानकारी लेकर सीधे बैंक में जमा कर सकते हैं। *(कृपया इस बात को ध्यान में रखें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफ.सी.आर.ए. परमीट नहीं है, अतः हम केवल भारतीय नागरिकों से बैंक योगदान पा सकते हैं। यदि आप चाहते हैं, तो दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से यह लिख सकते हैं कि ए.पी.सी. की किस सेवकाई के लिए आप अपने दान भेजना चाहते हैं।)*

बैंक खाते का नाम : ऑल पीपल्स चर्च

खाता क्रमांक : 0057213809

आय एफ एस सी क्रमांक : CITI0000004

बैंक : Citibank N.A., 506-507, Level 5, Prestige Meridian 2, # 30, M.G. Road, Bangalore - 560 001

उसी तरह, कृपया जब भी हो सके, हमें और हमारी सेवकाई को प्रार्थना में स्मरण रखें। **धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे।**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

बदलाव

अपनी बुलाहट से समझौता न करें

आशा न छोड़ें

परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना

परमेश्वर एक भला परमेश्वर है

परमेश्वर का वचन

सच्चाई

हमारा छुटकारा

समर्पण की सामर्थ

हम भिन्न हैं

कार्यस्थल पर महिलाएं

जागृति में कलीसिया

प्रत्येक काम का एक समय

आत्मिक मन से परिपूर्ण और पृथ्वी पर बुद्धिमान

पवित्रा लोगों को सिद्ध बनाना

अपने पास्टर की कैसे सहायता करें

कलह रहित जीवन जीना

एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है

परिशद्ध करने वाले की आग

व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्ध्नों को तोड़ना

आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानना

राज्य का निर्माण करने वाले

खुला हुआ स्वर्ग

हम मसीह में कौन हैं

ईश्वरीय कृपा

परमेश्वर का राज्य

शहरव्यापी कलीसिया में ईश्वरीय व्यवस्था

मन की जीत

जड़ पर कुल्हाडी रखना

परमेश्वर की उपस्थिति

काम के प्रति बाइबल का रवैया

ज्ञान, प्रकाश और सामर्थ का आत्मा

अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अदभुत लाभ

प्राचीन चिन्ह

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पी डी एफ संस्करण निःशुल्क डाऊनलोड के लिए हमारे चर्च वेब साईट पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की निःशुल्क प्रतियां प्राप्त करने हेतु कृपया हमसे ई–मेल या डाक द्वारा संपर्क करें।

रविवार के संदेश के एम पी 3 ऑडियो रिकार्डिंग, तथा कॉन्फ्रन्स और हमारे गॉड टी. व्ही. कार्यक्रम 'लिविंग स्ट्रांग' के विडियो रिकार्डिंग को सुनने या देखने के लिए हमारे वेब साईट को भेंट दें।

बाइबल कॉलेज

विश्वसनीय एवं योग्य स्त्री और पुरुषों को सुसज्जित करने, प्रशिक्षित करने और भारत तथा अन्य देशों में सेवा हेतु भेजने के उद्देश्य से ऑगस्ट 2005 में ऑल पीपल्स चर्च – बाइबल कॉलेज एवं मिनिस्ट्री ट्रेनिंग सेन्टर (APC - BC& MTC) की स्थापना की गई, ताकि गांवों, नगरों और शहरों को यीशु मसीह के लिए प्रभावित किया जा सके।

APC - BC& MTC दो कार्यक्रम प्रदान करता है :

- दो साल का **बाइबल कॉलेज** कार्यक्रम पूर्णकालीन विद्यार्थियों के लिए है और उत्कृष्ट शिक्षा के साथ आत्मिक और व्यवहारिक सेवा प्रशिक्षण प्रदान करता है। दो वर्षीय कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थियों को **डिप्लोमा इन थियोलॉजी ऑण्ड क्रिश्चियन मिनिस्ट्री** (Dip. Th.& CM) प्रदान की जाएगी।
- प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री ट्रेनिंग बाइबल कॉलेज के उन पद्वीधरों के लिए है जो व्यवहारिक प्रशिक्षण पाना चाहते हैं। एक या दो साल पूरा करने वालों को **सर्टिफिकेट इन प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री** प्रदान किया जाएगा जो उनके प्रशिक्षण काल को दर्शाता है।

कक्षाएं अंग्रेजी में होती हैं। हमारे पास प्रशिक्षित तथा अभिषक्त शिक्षक हैं।

इसके अतिरिक्त, सन 2012 में, चाम्पा क्रिश्चियन हॉस्पिटल की सहभागिता से हमने चाम्पा, छत्तीसगढ़ में अपने प्रथम अल्पकालीन (2.5 महीने) कार्यक्रम का संचालन किया। हमने इस कॉलेज से 45 विद्यर्थियों को प्रशिक्षित किया।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्‌भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अतः हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **''पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है''** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों

से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

नोट्स

प्रत्येक मसीही छुटकारा पाया हुआ व्यक्ति है। इसका अर्थ है कि हम शैतान की दासता से बाहर लाए गए हैं। शैतान एक विश्वासी को वैधानिक रूप से अपनी दुष्ट चालों से दबा नहीं सकता है। एक समय हम बन्धन में थे, परन्तु अब स्वतन्त्र हैं। एक समय हम अन्धकार के राज्य में थे परन्तु अब ज्योति के राज्य में हैं।

हमारा छुटकारा वर्तमान वास्तविकता है। ऐसा नहीं है कि हम भविष्य में शैतान के राज्य से स्वतन्त्र होने की आशा कर रहे हों। इसकी कीमत पहले ही चुकाई जा चुकी है। हम स्वतन्त्र किए जा चुके है। यहीं पर और इसी समय-जैसे हम इस जीवन में यात्रा करते हैं- हम मसीही में अपने छुटकारे के लाभों का आनन्द उठा सकते हैं। जब शत्रु अपने कामों-पाप की दासता, बीमारी, अभाव, विरोध आदि हमारे विरुद्ध में लेकर आता है-हम अपने छुटकारे की घोषणा करके अन्धकार के कामों को झिड़क सकते हैं, क्योंकि हम प्रभु के छुड़ाए हुए लोग हैं।

आशीष रायचूर

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org